पढ़े चलो, बढ़े चलो
Samagra Shiksha Abhiyan (Secondary Education)

निदानात्मक कक्षाओं हेतु मॉड्यूल

2021–22

विषय : हिन्दी

कक्षा : 9वीं

समग्र शिक्षा अभियान (सेकेण्डरी एजुकेशन) लोक शिक्षण संचालनालय, म.प्र.

लोक शिक्षण संचालनालय, म.प्र. भोपाल

आमुख

'आते ही मुख पर अति सुखद, जिसका पावन नामही
इक्कीस कोटि जन पूजिता,हिन्दी भाषा है वही '
(अयोध्या सिंह उपाध्याय)

भाषा व्यक्तित्व विकास में सहायक है। भाषा का अध्ययन विद्यार्थी को न केवल संस्कारवान बनाता है वरन् भाषा विद्यार्थी के चहुँमुखी विकास के उत्तरदायित्व का निर्वहन भी करती है। हिन्दी भाषा और इसका साहित्य मानव को मानवता की ओर अग्रसर करती है।

आप सभी को विदित है कि परीक्षा परिणाम के दृष्टिकोण से लगभग 40% से 50% विद्यार्थी वाँछित दक्षता प्राप्त करने में असफल रहते हैं। हिन्दी भाषा में दक्षता में निरंतर सफलता का स्तर अन्य विषयों की अपेक्षा तो अधिक है किन्तु हिन्दी भाषा में दक्षता में कमीं का प्रभाव अन्य विषयों की दक्षता पर भी पड़ता है। इस बात को ध्यान में रखते हुए एवं विद्यार्थियों को दक्षता स्तर तक पहुंचाने हेतु निदानात्मक कक्षाओं हेतु एक मॉड्यूल तैयार किया गया है।

ऐसे विद्यार्थी जो त्रैमासिक परीक्षा में अच्छा प्रदर्शन नहीं कर सके हैं उनके लिए निदानात्मक कक्षाएँ होंगी। निदानात्मक कक्षाओं में मुख्यतः उन इकाईयों पर ध्यान केन्द्रित किया जाएगा जो विद्यार्थियों के सीखने की दृष्टि से सरल हो तथा कम समय में भी बारबार अभ्यास करके उन इकाईयों से संबंधित प्रश्नों को हल कर सकें। आप सब ब्लू प्रिंट से परिचित हैं। इसमें इकाईवार अंको का आवंटन होता है। निदानात्मक कक्षाओं हेतु तैयार किये गये इस मॉड्यूल का आधार कक्षा 9वीं/10वीं के लिए माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश भोपाल द्वारा निर्धारित ब्लूप्रिन्ट है जिसके आधार पर हिन्दी की निदानात्मक कक्षाओं के लिए इकाईवार प्राथमिकता का क्रम निर्धारित किया गया है।

इस प्रकार निदानात्मक कक्षाओं में मॉड्यूल में दी गई विषयवस्तु का अध्यापन एवं अभ्यास नियमित कराया जाता है तो विद्यार्थी हिन्दी विषय में न्यूनतम 50 प्रतिशत अंक प्राप्त कर भविष्य में निरंतर अध्ययन की ओर अग्रसर हो सकते हैं।

इस दृष्टि से हिन्दी विषय 9वीं/10वी के लिए तैयार किए गए मॉड्यूल में शिक्षण संकेत भी प्रदान किए गए हैं, साथ ही शिक्षण को प्रभावी बनाने हेतु विविध गतिविधियों का भी समावेश किया गया है।

मॉड्यूल हिन्दी के विषय के शिक्षकों एवं विद्यार्थियों हेतु निश्चित तौर पर उपयोगी होगा इसी आशा के साथ.....

मॉड्यूल निर्माणकर्ता

- **डॉ. मीनाक्षी दुबे**

  (उ.मा.शि.)

  विषय विशेषज्ञ, स्टेट असेसमेंट सेल,

  लोक शिक्षण संचालनालय, म.प्र. भोपाल

- **डॉ. चित्रा पिल्लै**

  (उ.श्रे.शि.)

  शासकीय उ.मा.वि. निशातपुरा, भोपाल

शासकीय हाई एवं हायर सेकेन्डरी विद्यालयों में निदानात्मक कक्षाओं (Remedial teaching) का संचालन

निदानात्मक टीचिंग अर्थात निदानात्मक शिक्षण का उद्देश्य विद्यार्थियों की पाठ्यक्रम संबंधी कठिनाईयों का निदान करना, उनकी कठिनाईयों/समस्याओं को दूर करने में सहायता के लिए आवश्यक मार्गदर्शन प्रदान करना है, ताकि विद्यार्थी अगली कक्षा में जाने के लिए तैयार हो सके। निदानात्मक टीचिंग के प्रभावी क्रियान्वयन हेतु यह आवश्यक है कि शाला के प्राचार्य नियमित कक्षाओं की तरह निदानात्मक कक्षाओं के संचालन तथा इसके उद्देश्य के अनुरूप कार्यवाही सुनिश्चित करें।

निदानात्मक टीचिंग हेतु निम्नानुसार कार्यवाही सुनिश्चित करें –

- विमर्श पोर्टल पर त्रैमासिक परीक्षा परिणाम की प्रविष्टि की गई है । त्रैमासिक परीक्षा परिणाम का विश्लेषण करें।
- त्रैमासिक परीक्षाओं के परिणाम के आधार पर कक्षा 9 तथा कक्षा 10 में औसतन 50 प्रतिशत विद्यार्थी , एवं कक्षा 11 एवं 12 में भी लगभग 30 से 35 प्रतिशत विद्यार्थी सी, डी एवं ई ग्रेड में है। अतः ऐसी स्थिति में सभी कक्षाओं (9वीं, 10वीं, 11वीं एवं 12वीं) के लिए निदानात्मक कक्षाओं का संचालन अनिवार्य होगा।
- राज्य स्तर से समस्त शिक्षकों, प्राचार्यों एवं अधिकारियों का उन्मुखीकरण शीघ्र ही किया जाएगा। अधिकारियों से अपेक्षा है कि वे अपने जिले के शिक्षकों एवं प्राचार्यों के साथ निदानात्मक कक्षाओं के संचालन पर एक बैठक 25 नवम्बर तक आयोजित करने की कार्यवाही सुनिश्चित करेंगे।

1. **ग्रेड आधार पर सेक्शन बनाना**– त्रैमासिक परीक्षाओं में विद्यार्थियों के ग्रेड के आधार पर सेक्शन पुनः बनाये जाएँ।
   - ऐसी शालाएँ जहाँ एक से अधिक सेक्शन हैं वहाँ सी, डी एवं ई ग्रेड के विद्यार्थियों के लिए पृथक सेक्शन बनाया जाए ताकि विद्यार्थियों के स्तर के अनुरूप पठन–पाठन हो सके।
   - ऐसी शालाएँ जहाँ एक ही सेक्शन हैं वहॉ सी, डी एवं ई ग्रेड के विद्यार्थियों की संख्या के आधार पर शिक्षक द्वारा निर्णय लिया जाएगा कि उसे किस तरह पढ़ाना है। यदि कक्षा में अधिकांश विद्यार्थी सी डी ई ग्रेड में है तो उन्हें निदानात्मक टीचिंग मॉड्यूल ही पढ़ाया जाएगा एवं बी ग्रेड के विद्यार्थी को अलग से पढ़ाने की व्यवस्था करेंगे।
   - त्रैमासिक परीक्षाओं में ई ग्रेड को भी दो भागों E_1 एवं E_2 में बॉटा जाता है,ताकि विद्यार्थियों के वास्तविक स्तर की जानकारी शिक्षक को हो सके। वह विद्यार्थियों को इस तरह पढाये कि विद्यार्थी न्यूनतम दक्षता प्राप्त कर सके।

2. **निदानात्मक कक्षाओं हेतु सामग्री**–
   - निदानात्मक कक्षाओं हेतु कक्षा 9 एवं 10 के लिए हिन्दी, अंग्रेजी, गणित, विज्ञान एवं सामाजिक विज्ञान कुल पॉच विषयों के मॉड्यूल विमर्श पोर्टल पर भी उपलब्ध करवायें जायेंगे।
   - निदानात्मक कक्षाओं हेतु तैयार मॉड्यूल को वार्षिक परीक्षा के ब्लू–प्रिन्ट को ध्यान में रखकर विषय विशेषज्ञों द्वारा तैयार किया गया है, जिसमें अध्याय के लिए प्राथमिकता का क्रम तैयार किया गया है। जिसके अनुसार ही निदानात्मक टीचिंग का पठन पाठन कराया जाना अनिवार्य होगा।
   - कक्षा संचालन हेतु शिक्षक विभागीय यू–ट्यूब चैनल (Vimarsh MP SED) पर उपलब्ध शैक्षणिक वीडियो का उपयोग कर सकते हैं। इन वीडियो की लिंक निदानात्मक मॉड्यूल में भी प्रदान की जायेगी।

3. **निदानात्मक कक्षाओं का संचालन–**

- निदानात्मक कक्षाओं का संचालन 09 दिसम्बर से सतत् किया जाएगा।
- त्रैमासिक परीक्षाओं का विश्लेषण विमर्श पोर्टल पर उपलब्ध हैं जो प्राचार्यो द्वारा परीक्षा परिणाम के आधार पर भरा गया है। प्रत्येक शाला के पास डी एवं ई ग्रेड के विद्यार्थियों की सूची उपलब्ध है। ई ग्रेड में भी दो श्रेणियॉ बनाई गई है, E_1 ग्रेड अर्थात ऐसे विद्यार्थी जिन्होने 20 से 33 प्रतिशत के मध्य अंक प्राप्त किये है, तथा E_2 ग्रेड अर्थात ऐसे विद्यार्थी जिन्होने 0 से 20 प्रतिशत तक अंक प्राप्त किये है। E_1 श्रेणी के विद्यार्थियों पर विशेष रूप से ध्यान दिया जावे ताकि ये विद्यार्थी न्यूनतम दक्षता प्राप्त कर सके ।
- निदानात्मक कक्षाएँ उन्हीं शिक्षकों के द्वारा ली जाए जिन शिक्षकों द्वारा कक्षा में संबंधित विषय का अध्यापन कराया जाता है क्योंकि उन्हें यह पता होगा कि किस विद्यार्थी का स्तर क्या है तथा किन टॉपिक्स में उन्हें समस्या है।
- ऐसी शालाएं जहाँ डी एवं ई ग्रेड के अलग–अलग सेक्शन निर्मित है वहाँ सभी कालखण्ड़ में निदानात्मक टीचिंग के मॉड्यूल से ही पढ़ाया जायेगा। अर्थात विषयमान से लगाए जा रहे कालखण्ड़ में भी तथा निदानात्मक टीचिंग के 2 कालखण्ड़ में भी। ऐसे सेक्शन के लिए प्रत्येक दिवस किन्ही 2 विषयों के लिए 80–80 मिनट के कालखण्ड़ एवं शेष 4 विषयों के 40–40 मिनट के कालखण्ड़ होंगें। 80 मिनट वाले कालखण्ड़ के विषय प्रतिदिन परिवर्तित रहेंगें। अर्थात यदि प्रथम दिवस हिन्दी एवं अंग्रेजी के 80 मिनट हैं तो अगले दिन विज्ञान एवं गणित के 80–80 मिनट के कालखण्ड़ होंगें। इस आधार पर समय–सारणी को तैयार करने का दायित्व प्राचार्य का होगा।
- यदि सी, डी एवं ई ग्रेड के विद्यार्थियों का पृथक सेक्शन न बना हों तो कक्षा 9वीं में तीसरा एवं चौथा कालखण्ड (80 मिनट) तथा कक्षा 10वीं में दूसरा एवं तीसरा कालखण्ड़ (80 मिनट) निदानात्मक कक्षाओं के लिए होगा। कक्षा 11वीं एवं 12वीं के लिए शैक्षणिक केलेण्डर अनुसार निदानात्मक कक्षाओं का संचालन किया जायेगा।

4. **ऐसी शालाएँ जहाँ विषयमान से शिक्षक नहीं है वहाँ**

- एक परिसर एक शाला वाले स्कूलों में शिक्षकों का उपयोग उनकी शैक्षणिक योग्यता के आधार पर किया जाए।
- ऐसे शिक्षकों को प्राथमिकता दी जाए जहाँ स्कूलों की आपस में साझेदारी हो सकती है। उदाहरण के लिए यदि एक स्कूल में गणित के शिक्षक उपलब्ध है, किन्तु अंग्रेजी के नही हैं, जबकि निकटस्थ किसी स्कूल में अंग्रेजी के शिक्षक उपलब्ध है किन्तु गणित के नही, ऐसी स्थिति में दोनों स्कूलों के विषय शिक्षकों की सेवायें साझा कर ली जायें। विषय शिक्षण की इस साझेदारी व्यवस्था कराने को प्राथमिकता दी जाये।
- जहॉ साझेदारी न हो सके वहां भी शिक्षक व्यवस्था अन्य विद्यालयों से विषयमान से पूर्ण की जाये।
- उपर्युक्त व्यवस्था में शिक्षकों को सप्ताह में 03 दिवस अपने विद्यालय में तथा 03 दिवस निकट के विषय शिक्षक विहीन विद्यालय में सेवायें देनी होगी। संबंधित दोनों विद्यालय (शिक्षक की मूल शाला तथा आवंटित शाला दोनों) के लिए इस व्यवस्था को ध्यान में रखकर उचित प्रकार से समय–सारणी निर्धारित करेंगे तथा संबंधित विषय के शिक्षक अपनी मूल शाला एवं आवंटित शाला दोनों स्थानों पर अपने विषय का पठन पाठन पूर्ण करायेंगे। अर्थात मूल शाला में शैक्षणिक कार्य भी प्रभावित न हो यह भी सुनिश्चित किया जायेगा। जिला शिक्षा अधिकारी द्वारा इस संबंध में आदेश जारी किये जाएंगे। इन शिक्षकों की उपस्थिति दोनों स्कूलों में ली जावे तथा निर्देश का पालन न करने वालों के विरूद्ध सख्त कार्यवाही की जावे।
- इस प्रकार की गई व्यवस्था में प्रयुक्त शिक्षक को नियमानुसार माह में न्यूनतम 10 दिवस की अन्य शाला में उपस्थिति के लिए आवागमन व्यय **'निदानात्मक टीचिंग मद'** से रू. 1500 प्रतिमाह दिया जायेगा।

- यदि निकटस्थ स्कूल से व्यवस्था न हो सके, तो, प्राचार्य निदानात्मक शिक्षण कालखंड के दौरान कक्षाओं में विद्यार्थियों को लैपटॉप, फोन या स्मार्ट टीवी के माध्यम से डिजिटल सामग्री द्वारा अध्ययन करने की व्यवस्था कर सकते हैं। अध्ययन संबंधी डिजिटल सामग्री बुकलेट में उपलब्ध करवाई गयी है।
- कक्षा 11 एवं 12 के लिए प्रश्न बैंक प्रदान किए जाएंगे।

5. अभ्यास

- प्रत्येक विषय हेतु निदानात्मक कक्षाओं की प्रत्येक विद्यार्थी की एक अलग कॉपी बनवाई जायेगी। जो शिक्षक अध्यापन करायेंगे वे प्रतिदिन की दिनांक एवं टॉपिक कॉपी पर लिखवाएँगें।
- विद्यार्थियों से बार बार अभ्यास कराकर उन्हें उस दक्षता में दक्ष बनाया जायेगा। निदानात्मक कक्षाओं का मूल उद्देश्य विद्यार्थियों से सतत अभ्यास करवाकर उन्हे दक्ष बनाना है। अतः सिर्फ मॉड्यूल के पढ़ाने से समस्या का हल नहीं होगा अपितु पढ़ाई के साथ अभ्यास कराने से विद्यार्थियों के स्तर का उन्नयन होगा।
- शिक्षक सुनिश्चित करेंगे कि विद्यार्थियों को विद्यालय एवं घर पर अभ्यास हेतु पर्याप्त समय मिले।
- ग्राफ/चित्र/मॉडल, प्रयोग करके दिखाना/करवाना, वर्कशीट से अभ्यास कराया जायेगा।
- प्रतिदिन निदानात्मक शिक्षण से सम्बंधित विषय पर अलग से कक्षा कार्य एवं गृह कार्य देना और जांच कर त्रुटियों को सुधरवाया जायेगा।

6. मूल्यांकन–

- विद्यार्थियों का प्रति सप्ताह टेस्ट लिया जायेगा तथा उसका रिकार्ड रखा जायेगा।
- टेस्ट के आधार पर विद्यार्थी क्या सीख नहीं पाया इसका आकलन कर उन विद्यार्थियों को पुनः उसी टॉपिक को पढ़ाया जायेगा।
- निरीक्षणकर्ता विद्यार्थियों की कॉपी देखकर निदानात्मक टीचिंग का अवलोकन करेंगे।
- अर्द्धवार्षिक एवं प्री–बोर्ड परीक्षा का पाठ्यक्रम शैक्षणिक केलेण्डर के अनुसार ही होगा।

7. निरीक्षण/मॉनिटरिंग –

- समस्त विद्यार्थियों की काउंसलिंग की जायेगी। प्राचार्य प्रत्येक सप्ताहिक बैठक में शिक्षकवार, विषयवार, विद्यार्थी वार समीक्षा करेंगे। जिसमें विद्यार्थियों को आने वाली कठिनाईयों पर विशेष चर्चा करेंगे। इस पूर्ण कार्यवाही के अभिलेखों का संधारण करेंगे।
- निदानात्मक टीचिंग के प्रभावी क्रियान्वयन हेतु यह आवश्यक है कि शाला के प्राचार्य नियमित कक्षाओं की तरह निदानात्मक कक्षाओं के संचालन की जवाबदेही तय करें एवं इस ओर ध्यान दें तथा समुचित रूप से उद्देश्य के अनुरूप कार्यवाही करें एवं सभी विद्यार्थियों को न्यूनतम दक्षता हासिल करवाना सुनिश्चित करेंगे।
- **जिला स्तरीय टीम द्वारा आकस्मिक मॉनिटरिंग –** जिला स्तर से अकादमिक दल के अतिरिक्त नियमित निदानात्मक कक्षाओं के संचालन की व्यवस्था की मॉनिटरिंग हेतु टीम गठित की जाएगी जो आकस्मिक रूप से शालाओं का निरीक्षण कर यह सत्यापित करेंगी कि प्रत्येक शाला में निदानात्मक कक्षा चल रही है या नहीं।
- इस सम्पूर्ण कार्य की मॉनिटरिंग का दायित्व जिला शिक्षा अधिकारी, अतिरिक्त जिला परियोजना समन्वयक एवं विकास खण्ड शिक्षा अधिकारी का होगा

आयुक्त
लोक शिक्षण म.प्र.

निदानात्मक कक्षा अध्यापन हेतु प्राथमिकता का क्रम

कक्षा – 9 वीं पूर्णांक – 80

विषय – हिन्दी

इकाई के अध्यापन का क्रम	इकाई क्रमांक .	इकाई एवं विषय वस्तु	इकाई एवं आवंटित अंक	वस्तुनिष्ठ प्रश्न	अंकवार प्रश्नों की संख्या			कुल प्रश्न
				1 अंक	2 अंक	3 अंक	4 अंक	
1	वस्तुनिष्ठ प्रश्न	इकाई 1 से इकाई 6 तक के वस्तुनिष्ठ प्रश्न (कुल 32 अंक)						
2	6	**अपठित काव्यांश/अपठित गद्यांश**	3	–	–	1	–	1
3	7	**पत्र – लेखन** – (ब्रिजकोर्स 4 अंक) औपचारिक पत्र/अनौपचारिक पत्र	4	–	–	–	1	1
4	8	**निबन्ध लेखन** – किसी एक विषय पर निबन्ध लेखन अनुच्छेद लेखन (ब्रिजकोर्स 3 अंक) व संवाद लेखन	7	–	–	1	1	2
5	3	**क्षितिज भाग–1** **गद्यखण्ड** – गद्य की विधाओं का परिचय, लेखक परिचय, व्याख्या, विषय वस्तु एवं विचार बोध पर आधारित प्रश्न	16	6	3	–	1	4
6	1	**क्षितिज भाग–1** **काव्य खंड** – पद्य साहित्य का इतिहास,भक्ति काल,आधुनिक काल–प्रगतिवाद, छायावाद, नई कविता , कवि परिचय, भावार्थ, सौन्दर्य बोध तथा भाव एवं तथा विषय वस्तु पर आधारित प्रश्न	17	7	3	–	1	4
7	2	**काव्य बोध** – काव्य की परिभाषा एवं भेद रस की परिभाषा व्र प्रकार उदाहरण, छन्द, दोहा, सवैया, चौपाई, मुक्तक छन्द, अलंकार–अनुप्रास, रुपक, उपमा, उत्प्रेक्षा, मानवीकरण,	14	7	2	1	–	3
8	4	**भाषा बोध** – संधि परिचय एवं प्रकार, निपात शब्द, रचना के आधार पर वाक्य के भेद, मुहावरे, क्रिया –विशेषण, वर्तनी, विलोम शब्द, उपसर्ग व प्रत्यय (ब्रिजकोर्स 1 अंक का प्रश्न), सामासिक पद, क्रिया के भेद, शब्द युग्म, तत्सम शब्द, आंचलिक शब्द, विज्ञापन लेखन	11	6	1	1	–	2
9	5	**कृतिका भाग – 1** पूरक पाठ्य पुस्तक से विविध पाठों पर आधारित प्रश्न, आंचलिक भाषा के पाठों में से प्रश्न	8	6	1	–	–	1
		कुल योग	**80**	**32**	**20**	**12**	**16**	**18 + 5 = 23**

प्रश्न पत्र निर्माण हेतु विशेष निर्देश :–

1. प्रश्न क्रमांक 1 से 32 तक वस्तुनिष्ठ प्रश्न होंगे। सही विकल्प, 06 अंक, रिक्त स्थान 07 अंक, सही जोड़ी 06 अंक, एक वाक्य में उत्तर 07 अंक, सत्य–असत्य 06 अंक संबंधी प्रश्न होंगे। प्रत्येक प्रश्न के 01 अंक निर्धारित हैं। वस्तुनिष्ठ प्रश्नों को छोड़कर सभी प्रश्नों में आंतरिक विकल्प का प्रावधान होगा। यह विकल्प समान इकाई/उपइकाई से तथा समान कठिनाई स्तर वाले होंगे। इन प्रश्नों की उत्तर सीमा निम्नानुसार होगी :–
   अति लघु उत्तरीय प्रश्न 02 अंक लगभग 30 शब्द
   लघु उत्तरीय प्रश्न 03 अंक लगभग 75 शब्द
   दीर्घ उत्तरीय प्रश्न 04 अंक लगभग 120 शब्द
2. 40 प्रतिशत वस्तुनिष्ठ प्रश्न, 40 प्रतिशत पाठ्यवस्तु पर आधारित प्रश्न, 20 प्रतिशत विश्लेषणात्मक प्रश्न होंगे।
3. सत्र 2021–22 हेतु कम किये गये पाठ्यक्रम में से प्रश्न–पत्र में प्रश्न न दिए जायें।
4. पाठ्यवस्तु पर आधारित प्रायोजना कार्य हेतु 20 अंक आवंटित हैं।

नोट :– परीक्षा में 10% अधिभार ब्रिजकोर्स को दिया जाएगा।

1. **प्रश्न बैंक एवं मॉड्यूल के ब्लू प्रिंट में ब्रिज कोर्स संबंधी जानकारी दी गई है।**
2. **ब्रिज कोर्स से परीक्षा में 8 अंक (10%) के प्रश्न पूछे जाएँगे जिनमें 4 अंक का पत्र व 3 अंक का अनुच्छेद रहेगा। पत्र व अनुच्छेद संबंधी प्रश्न ब्रिज कोर्स में दी गई विषय वस्तु की अवधारणा पर आधारित होंगे। 1 अंक उपसर्ग व प्रत्यय संबंधी प्रश्न का होगा।**

अनुक्रमाणिका (विषय सूची)
कक्षाः– 10वीं
विषयः– हिन्दी विशिष्ट

अध्यापन इकाई क्रमांक	इकाई का नाम/अध्यापन का क्रम	विषय–वस्तु
1	वस्तुनिष्ठ प्रश्न	इकाई 1 से 6 तक के वस्तुनिष्ठ प्रश्न
2	अपठित बोध –	अपठित काव्यांश/अपठित गद्यांश
3	पत्र – लेखन (ब्रिज कोर्स)	औपचारिक पत्र/अनौपचारिक पत्र
4	निबन्ध लेखन –	किसी एक विषय पर किसी एक शीर्षक पर अनुच्छेद लेखन व संवाद लेखन (ब्रिज कोर्स)
5	क्षितिज भाग–1 गद्य खण्ड –	गद्य की विधाओं का परिचय, लेखक परिचय, व्याख्या, विषय वस्तु एवं विचार बोध पर आधारित प्रश्न
6	क्षितिज भाग–1 काव्य खंड –	पद्य साहित्य का इतिहास, भक्ति काल, आधुनिक काल–छायावाद, प्रयोगवाद,नई कविता, कवि परिचय, भावार्थ, सौन्दर्य बोध तथा भाव एवं तथा विषय वस्तु पर आधारित प्रश्न
7	काव्य बोध –	काव्य की परिभाषा एवं भेद रस की परिभाषा व्र प्रकार उदाहरण सहित, छन्द–मात्रिक छन्द में दोहा, चौपाई, अलंकार–अनुप्रास, रुपक, उपमा, उत्प्रेक्षा, मानवीकरण, पुनरुक्ति प्रकाश
8	भाषा बोध – (ब्रिज कोर्स)	निपात शब्द, वाक्य क्रिया के भेद व क्रिया विशेषण, समुच्च्य बाधक, मुहावरे व लोकोक्ति, अनेकार्थी शब्द, समास, विज्ञापन लेखन, सूचना लेखन
9	कृतिका भाग – 1	पूरक पाठ्य पुस्तक से विवधि पाठों पर आधारित प्रश्न, आंचलिक भाषा के पाठों में से प्रश्न

शिक्षकों से अपेक्षा

यह मॉड्यूल निदानात्मक कक्षा हेतु तैयार किया गया है जिसमें सम्पूर्ण पाठ्यक्रम के कुछ महत्वपूर्ण अंशों के अध्यापन हेतु शिक्षण निर्देश एवं गतिविधियों को विशेष रुप से सम्मिलित किया गया है। शिक्षकों से अपेक्षा है कि वे इस मॉड्यूल का प्रयोग निदानात्मक कक्षा में करते हुए, छात्रों को अच्छे अंक प्राप्त कर ज्ञान एवं बोध के नवीन सौपानों पर पहुँचाने का सफल प्रयास करेंगे।

1–वस्तुनिष्ठ प्रश्न

ब्लूप्रिंट के अनुसार इकाई 1 से इकाई 6 तक के पाठ्यक्रम से 32 अंक के वस्तुनिष्ठ प्रश्न परीक्षा में पूछे जाएँगे।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न हेतु गतिविधि – शिक्षकों को निदानात्मक कक्षा में वस्तुनिष्ठ प्रश्नों की तैयारी करवाने पर विशेष ध्यान देना होगा। इसके लिए निम्नलिखित गतिविधियों को सम्मिलित किया जा सकता है।

गतिविधि क्रमांक–1

प्रश्नमंच प्रतियोगिता

(1) विद्यार्थियों को छः समूहों में विभाजित कर समूहों को हिन्दी साहित्यकारों के नाम दीजिए। अर्थात् साहित्यकारों के नाम पर समूह का नाम रखा जाए।

(2) वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के प्रकारों के आधार पर 5 राउण्ड या चरणों में प्रश्नमंच का आयोजन किया जाए। जैसे :–

(क)	पहला चरण	रिक्त स्थान
(ख)	दूसरा चरण	बहुविकल्प
(ग)	तीसरा चरण	सत्य/असत्य
(घ)	चौथा चरण	सही जोड़ी (श्यापट्ट पर लिखकर)
(ड.)	पाँचवा चरण	एक वाक्य में उत्तर

(3) अंत में विजेता समूह की घोषणा कर पुरस्कृत किया जाए। अन्य समूहों को आगे बेहतर करने की प्रेरणा शिक्षक द्वारा प्रदान की जाए।

गतिविधि क्रमांक–2 वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के लिए शिक्षक पाठ को पढ़ाते समय 20 स्मरणीय बिन्दुओं को रेखाकित करके छात्रों में एक–एक बिन्दु या संख्या दे दें। मान लीजिए कक्षा में 40 छात्र हैं। बिन्दु 20 है तो क्रमांक 1 से 20 तक बिन्दु बाँट दीजिए व 21 से 40 तक छात्रों को पुनः बिन्दु क्रमांक 1 से 20 बाँट दीजिए। इन बिन्दुओं को सभी अपनी कॉपियों में लिखेंगे। इस प्रकार प्रत्येक छात्र एक–एक बिन्दु लिखेगा। इसके बाद उस बिन्दु से ही प्रश्न बनवा लीजिए। सभी छात्रों के पास 1 प्रश्न व 1 उत्तर रहेगा। अब बारी–बारी से छात्र अपने प्रश्न सुनाएंगे। सभी छात्र दोहराएगें फिर वह उत्तर सुनाएगें। सभी उत्तर दोहराएँगे। इस प्रकार सभी छात्रों को एक कालखण्ड में 20 वस्तुनिष्ठ प्रश्न याद हो जाएगें तथा प्रश्न बनाना भी आ जाएगा।

गतिविधि क्रमांक–3 प्रतिदिन छात्रों को 10 से 15 वस्तुनिष्ठ प्रश्न याद करवाऐं। इन प्रश्नों को कालखण्ड में सबसे पहले याद करवाऐं जिससे वे अच्छे अंक प्राप्त कर सके। वस्तुनिष्ठ प्रश्न प्रश्नबैंक में इकाई–वार दिए गए हैं। उन्ही प्रश्नों को हल करवाऐं।

गतिविधि क्रमांक–4 अनुक्रमाणिका/विषयसूची छात्रों को तैयार करवाएँ इसके लिए एक तालिका बनाकर बच्चों को दें जिसमें पाठ का नाम, पाठीक विधा एवं कवि/लेखक का नाम सम्मिलित हो। यह तालिका तैयार करवाने से छात्रों को 6 से 7 अंक परीक्षा में असानी से प्राप्त हो सकेंगे।

गतिविधि क्रमांक–5

(1) पूर्व में छात्रों को तीस या चालीस प्रश्न (वस्तुनिष्ठ प्रश्न) लिखवा दिए जाएँ।

(2) छात्रों से क्रमवार गिनती बुलवाई जाए। छात्र जो अंक बोलेगा वही क्रम का वह वस्तुनिष्ठ प्रश्न और उत्तर दोनों याद करेगा।

(3) सभी छात्रों को केवल पाँच मिनट का समय दिया जाएगा।

(4) पहला प्रश्न एक अंक बोलने वाला छात्र सुनाएगा। बाकी छात्र प्रश्न व उत्तर दोहरायेंगे। यही क्रिया 7 प्रश्नों तक चलेगी। इसी बीच शिक्षक अवलोकन कर जो छात्र नहीं बोल पा रहे हैं, उनका नाम नोट करके बाद में उसे पुनः याद करवा सकते हैं।

(5) इस प्रकार एक कालखंड में कम से कम 20 या 30 प्रश्न छात्र केवल सुनकर याद कर सकेंगे।

गृहकार्य–शिक्षक प्रतिदिन 10 वस्तुनिष्ठ प्रश्न छात्रों को घर से तैयार कर लाने को कहें और अगले दिन सर्वप्रथम उन्हीं प्रश्नों की कक्षा में पुनरावृत्ति करवाएँ।

अभ्यास हेतु निर्देश :– शिक्षक वस्तुनिष्ठ प्रश्नों का अभ्यास लोक शिक्षण संचालनालय द्वारा सत्र 2021–22 हेतु जारी किए गए प्रश्न बैंक के माध्यम से करवाएँ।

इकाई – 06 अपठित बोध

- **निर्धारित इकाई से 3 अंक का 1 प्रश्न परीक्षा में पूछा जाएगा।**

निर्धारित इकाई के अंतर्गत् एक अपठित गद्यांश व अपठित काव्यांश परीक्षा में दिया जाता है और उससे सम्बन्धित 2 से 3 प्रश्न पूछे जाते हैं। जिनका अंक विभाजन निम्नलिखित आधार पर होता है–

प्रश्न–1 शीर्षक – 01 अंक
प्रश्न–2 लघुउत्तरीय प्रश्न – 01 अंक
प्रश्न–3केन्द्रीय भाव/सारांश – 2 अंक

} कुल अंक 03

शिक्षण संकेत –

1. शिक्षक गद्यांश/पद्यांश को दो–तीन बार ध्यान से पढ़ने को विद्यार्थियों से कहें।
2. मूल भावों व विचारों को रेखांकित करने को कहें।
3. प्रश्नों के उत्तर, मूल गद्यांश में व काव्यांश ढूंढ़ने को कहें।
4. प्रश्नों का उत्तर सरल, संक्षिप्त, स्पष्ट होना चाहिए इस बात का अभ्यास कराएँ।
5. छोटे–छोटे वाक्य बनाने का अभ्यास कराएँ।

सामान्यतः 4 तरह के अपठित गद्यांश व अपठित काव्यांश परीक्षा में पूछे जाते हैं जिनके अभ्यास के लिए निम्नलिखित प्रक्रिया अपनाई जा सकती हैः–

1. किन्हीं भी दो महापुरूषों के रोचक प्रसंग सुनाकर व किन्हीं दो कवियों की रचनाएँ सुनाकर विद्यार्थियों में कर्तव्यबोध की अवधारणा अर्थ समझा दें। महापुरूष– महात्मां गांधी, ईश्वरचंद्र विद्यासागर, लाल बहादुर शास्त्री, जयशंकर प्रसाद व कबीर आदि।
2. बच्चों के बीच खेल की चर्चा करते हुए उनकी रूचि के खेलों पर बोलने के लिए कहें। बच्चों से पूछें कि खेलने से क्या–क्या लाभ होते हैं।

उपर्युक्त चर्चा के पश्चात् ही संबंधित अपठित बोध का अभ्यास कराएँ।

विषय से संबंधित महत्वपूर्ण प्रश्न–

शीर्षक लिखना–छोटी–छोटी कहानियाँ सुनाकर बच्चों से कहानी से मिलने वाली सीख पूछें। इसी 'सीख' से 'शीर्षक' का संबंध जोड़कर समझाएँ तत्पश्चात कुछ छोटे–छोटे प्रसंग सुनाएँ एवं उनका शीर्षक बनवाएँ। कहानी एवं प्रसंगों को बच्चों से दोहराने को कहें।

लघु प्रश्नों का अभ्यास –कहानियों, वृतान्त, प्रसंग से जुड़े हुए प्रश्न करके बच्चों से उत्तर लिखवाएँ।

सारांश – कहानी की मुख्य–मुख्य बातें संक्षेप में लिखवाएँ तत्पश्चात अपठित गद्यखण्ड व अपठित काव्यांश का लगभग 1/3 भाग मुख्य–मुख्य कथनों को लेकर लिखने का अभ्यास करवाएँ।

स्मरणीय बिन्दु–अपठित गद्य व पद्य खण्ड में सबसे महत्वपूर्ण स्मरणीय बिन्दु है कि शीर्षक 'एक शब्द से लेकर अधिकतम तीन शब्दों तक सीमित रहता है।' प्रायः कमजोर छात्र शीर्षक के उत्तर में वाक्य या अनुच्छेद ही पूरा उतार देते हैं। इसी प्रकार सारांश में सम्पूर्ण अपठित लिख देते हैं। यहाँ उन्हें स्मरण कराना है कि सारांश 1/3 भाग ही होता है।

गतिविधि–

1. सर्वप्रथम शिक्षक कक्षा में घोषणा करें कि 'आज मैं आपको एक कहानी सुनाता/सुनाती हूँ जिसको आपको ध्यान से सुनना है। सुनने के बाद कुछ प्रश्न जो कहानी से सम्बन्धित होंगे उनका उत्तर देना है।

2. सभी विद्यार्थी अपने पास उत्तरपुस्तिका और कलम रखें जिससे कि कहानी के मुख्य बिन्दुओं को साथ–साथ लिखते चलें।
3. शिक्षक अपने मन से कोई भी कहानी सुनाएँ। यहाँ ध्यान रखने योग्य बात यह है कि कहानी पाठ्यपुस्तक से न ली जाए।
4. कहानी सुनाने के बाद कहानी से सम्बन्धित कुछ प्रश्न शिक्षक श्यामपट्ट पर लिखें और विद्यार्थियों को निर्देश दें कि उन प्रश्नों के उत्तर अपनी – अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।
5. विद्यार्थियों द्वारा उन उत्तरों का मूल्यांकन किया जाए और सुधार हेतु निर्देश देते हुए अच्छे और सही उत्तरों का कक्षा में सस्वर वाचन कराया जाए।

पुनरावृत्ति–

शिक्षक द्वारा पढ़ाए गए कालखण्ड में विषयवस्तु से संबंधित मुख्य–मुख्य बातें छोटे–छोटे प्रश्नों के माध्यम से पुनरावृत्ति कर लेना चाहिए हालांकि यह कार्य मूल्यांकन के अंतर्गत भी संपादित होता है। प्रस्तुत विषय वस्तु से संभावित प्रश्न बनवाकर भी पुनरावुत्ति करवाई जा सकती है।

अभ्यास हेतु निर्देश :–

- शिक्षक अपठित गद्यांश/पद्यांश का अभ्यास लोक शिक्षण संचालनालय द्वारा सत्र 2021–22 हेतु जारी किए गए प्रश्न बैंक के माध्यम से करवाएँ।
- शीर्षक देकर अपठित लिखकर लाने को दें, उसका सारांश एवं लघुउत्तरीय प्रश्न भी तैयार करवाएँ।
- स्वयं अपठित बनाकर दें अथवा पाठ्यपुस्तक के गद्यपाठों से अनुच्छेद चुनकर उनका शीर्षक, लघुउत्तरीय प्रश्न एवं सारांश लिखकर लाने को कहें। गृहकार्य किसी भी विषयवस्तु को हृदयांगम कराने तथा स्मरणीय बिन्दुओं को स्थायित्व प्रदान करने के लिए अत्यंत आवश्यक है।

इकाई 07 – पत्र लेखन (4 अंकीय)

- **निर्धारित इकाई से 4 अंक का 1 प्रश्न परीक्षा में पूछा जाएगा।**

शिक्षण विधि–

1. चर्चा विधि (मौखिक)
2. लेखन विधि – (प्रारूप विधि)
3. तालिका विधि
4. प्रश्नोत्तर विधि

गतिविधि हेतु सामग्री –

1. पोस्टकार्ड – अनौपचारिक पत्र हेतु
2. अन्तर्देशीय पत्र – अनौपचारिक पत्र हेतु
3. सफेद लिफाफा – औपचारिक पत्र हेतु
4. सफेद कागज 1 X 4 – औपचारिक पत्र हेतु

पत्र लेखन के उद्देश्य

- **औपचारिक पत्र के उद्देश्य/ प्रार्थना पत्र के उद्देश्य**

1. भाव व विचारों को व्यक्त करने की क्षमता का विकास करना।
2. स्वतंत्र लेखन की क्षमता का विकास करना।
3. पत्र लेखन कला द्वारा समस्या का समाधान करवाना।

- **अनौपचारिक पत्र के उद्देश्य/व्यक्तिगत पत्र के उद्देश्य**

1. परिवार के सदस्यों एवं मित्रों के प्रति आत्मीयता का भाव जागृत करना।
2. वर्तमान समय में मोबाईल के अत्यधिक प्रयोग के कारण अनौपचारिक पत्र लेखन विधा लुप्त होती जा रही है इस विधा को प्रोत्साहित करना।

4. पत्र लेखन

पत्र मुख्य रूप दो प्रकार के होते हैं :–

1. औपचारिक पत्र/प्रार्थना /आवेदन पत्र
2. अनौपचारिक पत्र/व्यक्तिगत पत्र

1. **औपचारिक पत्रः–** वे पत्र जो किसी कार्यालय, संस्था अथवा व्यावसायिक उद्देश्य की पूर्ति हेतु लिखे जाते हैं, औपचारिक पत्र कहलाते हैं।
2. जैसे – प्रार्थना – पत्र/आवेदन पत्र
3. **अनौपचारिक पत्रः–** वे पत्र जो निजी या व्यक्तिगत होते हैं अथवा जिन पत्रों में औपचारिकता का समावेश नहीं होता। वे अनौपचारिक पत्र कहलाते हैं। इन्हें व्यक्तिगत पत्र भी कहते हैं।

   जैसे – बधाई–पत्र, आमंत्रण पत्र आदि।

औपचारिक – पत्र /प्रार्थना पत्र

विद्यालय के प्राचार्य को स्थानान्तरण प्रमाण – पत्र प्राप्त करने हेतु आवेदन पत्र

शिक्षण संकेत बिन्दु :–

(1) सर्वप्रथम शिक्षक दिए गए विषय में से निम्न बिन्दुओं पर चर्चा करें –

I. किसको पत्र लिखा जा रहा है?
II. क्यों लिखा जा रहा है?
III. कारण सम्बंधी विषय – वस्तु (किस कारण लिखा जा रहा है?
IV. कौन लिख रहा है?
V. कब लिखा जा रहा है?

प्रति,

किसको ?

विषय क्यों ?

कारण संबंधी विषय–वस्तु
(किस कारण पत्र लिखा जा रहा है उसका विवरण)

कब ?

किसने

(2) अगले चरण में शिक्षक कुछ ऐसे शब्द एवं वाक्य प्रारूप में लिखकर दें जो औपचारिक पत्रों (आवेदन – पत्र) में हमेशा उपयोग में लाए जा सकते हैं।
उदाहारण –

प्रति,

विषय

विनम्र निवेदन है कि ——————————————
————————————————————————
——————————————।
अतः निवेदन है कि मुझे
—————————— प्रदान करने की कृपा करें।

धन्यवाद

प्रार्थी

गतिविधि –

1. पत्र प्रारूप में रिक्त स्थान में कौन से वाक्य आएँगे इसका अभ्यास अलग – अलग विषय देकर छात्रों से करवाना चाहिए।

विषय वस्तु– अनौपचारिक/व्यक्तिगत पत्र

- बड़े भाई को गर्मी की छुट्टियों का वर्णन करते हुए पत्र

  शिक्षण संकेत बिन्दु ⟶

(1) सर्वप्रथम शिक्षक दिए गए विषय पर निम्नलिखित बिन्दुओं पर चर्चा करें–

i. जो पत्र लिख रहा है उसका पता
ii. सम्बोधन
iii. विषय – वस्तु
iv. जिसे पत्र भेजा जा रहा है उसका पता
v. किसने लिखा ?

अनौपचारिक – पत्र का प्रारूप

भेजने वाले का पता दिनांक –

सम्बोधन एवं अभिवादन

विषय – वस्तु

लिफाफे के लिए पता (प्राप्त करने वाले का पता)

किसने

पत्र लेखन (कुल अंक 4) अंक विभाजन

(1) प्रारूप

प्रति,

श्रीमान ..... 1 अंक (संबोधन पर 1 अंक)
विषय – (सही विषय लिखने पर 1 अंक)
विनम्र

————————————————————————————————————
————————————————————————————————1 अंक
————————————————————(विषय वस्तु को स्पष्ट करने पर 1 अंक)————
————————————————————————————————————

धन्यवाद
प्रार्थी 1 अंक

उपर्युक्त प्रारूप को बोर्ड पर लिखें तथा विद्यार्थियों को बताएं कि क्या लिखने पर कितने अंक प्राप्त होते हैं –

यदि आपने संबोधन सही लिखा है तो 1 अंक, विषय जो कि प्रश्न में ही दिया होता है उसे लिखने पर 1 अंक, समापन पर अर्थात प्रार्थी एवं नाम लिखने पर 1 अंक तथा विषयवस्तु लिखने पर 1 अंक मिलते हैं।

अनौपचारिक (व्यक्तिगत पत्र हेतु)

पत्र– लेखन कुल अंक–4 **अंक विभाजन**

(2) प्रारूप

संबोधन – 1 अंक

पूज्यनीय/आदरणीय प्रेषक का पता
बड़ो के लिए आदर सूचक शब्द दिनांक सहित
प्रिय/अनुज 1 अंक
बराबर व छोटों के लिए शब्द
अभिवादन
सम्पूर्ण विषय–वस्तु लिखने पर 1 अंक

————————————————————————————————————
————————————————————————————————————
————————————————————————————————————

1 अंक प्रेषक का नाम

सामान्यतः होने वाली गलतियाँ –

1. सम्बोधन में – जैसे – प्राचार्य के स्थान पर (महिला प्राचार्य होने पर) प्राचार्या लिख देना। अतः हमेशा प्राचार्य ही आना चाहिए चाहे महिला हो या पुरूष। क्योंकि पद कभी भी स्त्रीलिंग में नहीं परिवर्तित होता।
2. अल्प – विराम, पूर्ण विराम न लगाना।
3. कृपा और कृपया शब्द में भेद न कर पाना।
4. वर्तनी सम्बंधी अशुद्धियाँ – प्रार्थी, प्रति, प्राचार्य, चरण – स्पर्श आज्ञाकारी।
5. अव्यवस्थित प्रारूप
6. छात्र प्रार्थी में अपना स्वयं का नाम लिख देते है। जबकि ऐसा करना परीक्षा की दृष्टि से गलत है।

होने वाली गलतियों का समाधान–

1. निदानात्मक कक्षा हेतु तैयार किए गए मॉड्यूल की सम्पूर्ण विषय वस्तु का शिक्षक बार–बार अध्यापन एवं अभ्यास कराएँ।
2. निर्धारित प्रारूप में अलग – अलग विषय के औपचारिक एवं अनौपचारिक पत्रों का अध्यापन एवं आदर्श पत्र – लेखन शिक्षक द्वारा स्वयं किया जाए।

अभ्यास हेतु निर्देश :– शिक्षक औपचारिक एवं अनौपचारिक पत्रों का अभ्यास लोक शिक्षण संचालनालय द्वारा सत्र 2021–22 हेतु जारी किए गए प्रश्न बैंक के माध्यम से करवाएँ।

इकाई 08 –निबन्ध एवं अनुच्छेद/संवाद लेखन

- **निर्धारित इकाई से 3 अंक का 1 प्रश्न तथा 4 अंक का 1 प्रश्न परीक्षा में पूछा जाएगा।**

प्रस्तावना :–

सम्बन्धित विषय को आस–पास की चीजों से जोड़कर निदानात्मक कक्षा में अध्यापन कार्य कराया जाए।

गतिविधि–शिक्षक सर्वप्रथम अपने आस–पास की विषयवस्तु पर कुछ वाक्य लिखकर निबन्ध लेखन हेतु विद्यार्थियों को प्रेरित करें। प्रश्न बैंक में दिए गए विषयों पर निबन्ध लेखन का अभ्यास कक्षा में ही कराया जाए।

इसके अतिरिक्त अन्य समसामयिक विषयों पर निबन्ध लेखन का अभ्यास शिक्षक अपनी निगरानी में करवाएँ। निदानात्मक कक्षाओं हेतु बनाए गए इस मॉडयूल में कुछ बिन्दुओं पर चर्चा की गई है एवं कुछ

विषयों पर निबन्ध की रूपरेखा दी गई है जिसका प्रयोग निदानात्मक कक्षा हेतु शिक्षक द्वारा किया जाना विद्यार्थियों को लाभान्वित करेगा।

निबन्ध क्या है ?

किसी विषय पर स्वयं के भावों तथा विचारों को व्यवस्थित रूप से व्यक्त करना ही निबन्ध लेखन है। निबन्ध लिखते समय इस बात पर विशेष ध्यान केन्द्रित करना चाहिए कि आपके विचार एक निश्चित क्रम में हो। इसके अभाव में निबन्ध सुसम्बद्ध नहीं रह पाता। निबन्ध में व्यक्त किए गए भाव एवं विचार स्पष्ट होने चाहिए।

निबन्ध लेखन के भाग या चरण–

अंक विभाजन

1. प्रस्तावना	–	निबन्ध का प्रारम्भ	01 अंक
2. मध्यभाग	–	विस्तार या विषय विवरण	02 अंक
3. उपसंहार	–	निबन्ध का अंत	01 अंक

निबन्ध रचना विषयक महत्वपूर्ण बातें –

1. विद्यार्थियों को बताएँ कि वे रटकर न लिखें समझकर अपने शब्दों में लिखें।
2. जिस विषय पर निबन्ध लेखन करना हो उस पर चिन्तन करके ही लेखनी चलानी चाहिए।
3. निबन्ध की प्रस्तावना तथा उपसंहार प्रभावोत्पादक होना चाहिए।
4. निबन्ध में विषयानुरूप यत्र–तत्र कविता, सूक्ति तथा विद्वानों के उद्धरण प्रस्तुत करना चाहिए।
5. विचार क्रमबद्ध होने चाहिए।
6. भाषा–शैली आकर्षक व सुन्दर लेख होना चाहिए।
7. विराम चिह्नों का उचित प्रयोग एवं वर्तनी शुद्ध होनी चाहिए।

   भाग– ब में अनुच्छेद लेखन व संवाद लेखन जिसके लिए निर्धारित अंक 03 हैं।

गतिविधि–

1. विद्यार्थियों को चार समूह में विभाजित कर प्रत्येक को 10–10 मिनिट का समय दें जिसमें प्रत्येक समूह को एक–एक विषय निबन्ध या अनुच्छेद लेखन के लिए दें।
2. अगले चरण में चारों समूह अपनी–अपनी निबन्ध की रूपरेखा को सभी के समक्ष वाचन करेंगे।
3. इसके बाद एक समूह दूसरे समूह से और तीसरा समूह चौथे समूह से अपना–अपना निबन्ध या अनुच्छेद सुनेंगे।
4. शिक्षक समस्त गतिविधि का अवलोकन करते हुए मार्गदर्शन करें।
5. प्रत्येक समूह का हर विद्यार्थी अपनी–अपनी उत्तरपुस्तिका में बिना देखे निबन्ध/अनुच्छेद लिखें और शिक्षक मूल्यांकन करें।
6. अंत में शिक्षक सबसे शुद्ध वर्तनी एवं विषयवस्तु के आधार पर सर्वश्रेष्ठ निबन्ध/अनुच्छेद का चयन कर पुरस्कृत करें एवं प्रोत्साहन प्रदान करें।

संवाद लेखन – संवाद लेखन हेतु शिक्षक विभिन्न छोटे–छोटे पारिवारिक, सामाजिक, राजनैतिक तथा नैतिक विषयों पर कक्षा में चर्चा विधि का प्रयोग करें तथा उसी चर्चा का छात्रों में संवाद के रुप में परिवर्तित करने के गुणों का विकास करें।

अभ्यास हेतु निर्देश :– शिक्षक निबन्ध/अनुच्छेद अथवा संवाद लेखन का अभ्यास लोक शिक्षण संचालनालय द्वारा सत्र 2021–22 हेतु जारी किए गए प्रश्न बैंक के माध्यम से करवाएँ।

इकाई 2
गद्य खण्ड

- **निर्धारित इकाई से 1–1 अंक के 6 प्रश्न, 2–2 अंक के 3 प्रश्न तथा 4 अंक का 1 प्रश्न परीक्षा में पूछा जाएगा।**
- **क्षितिज भाग 1 के गद्य खण्ड से 'ल्हासा की ओर', 'साँवले सपनों की याद' पाठ से परीक्षा में कोई प्रश्न नहीं पूछा जाएगा।**

शिक्षण संकेत –1. शिक्षक विषय के (इकाई क्रमांक 2) के महत्वपूर्ण अंशो की सरल गतिविधियों के माध्यम से समझाने का प्रयास करें।

2. निदानात्मक कक्षाओं में अध्ययन कराते समय (T.L.M)का प्रयोग करें।
3. शिक्षक बीच–बीच में छात्रों का मूल्यांकन करते रहे जिससे छात्रों की स्थिति से अवगत हो सके।
4. इन गतिविधियों के अलावा शिक्षक अपनी स्वयं की गतिविधियो को भी शामिल कर सकता है।

4 अंक हेतु लगभग 120 शब्द उत्तर सीमा है।

- गद्य खण्ड की विविध विधाएँ– गौण व प्रमुख विधाएँ
- लेखक परिचय –
- गद्य पाठों की व्याख्या
- गद्य आधारित विचार बोध एवं विषय बोध पर प्रश्न

इस ब्लूप्रिन्ट को छात्रों से अवगत अवश्य कराएँ जिससे उन्हें अध्ययन करते समय इसकी जानकारी हो जाए कि हमें परीक्षा के लिए तैयारी कैसे करनी है, कौन सी इकाइयाँ पढ़नी है। वस्तुनिष्ठ प्रश्नों को छोड़कर सभी प्रश्नों में विकल्प का प्रावधान रखा गया है।

गद्य की विविध विधाएँ

सहायक सामग्री – जयशंकर प्रसाद, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, प्रेमचन्द, महादेवी वर्मा, व महात्मा गाँधी के चित्र।

नोट – शिक्षक अपने अनुसार सहायक सामग्री का उपयोग कर सकते हैं।

प्रस्तावना – प्राचीन काल में मुद्रण कला का अभाव था। अतः सभी रचनाएँ पद्य में ही जाती थीं। चूँकि हर व्यक्ति पद्य की रचना नहीं कर सकता था, इस कारण कई प्रतिभाएँ अपने विचारों को लिपिबद्ध नहीं कर पाती थीं।

आधुनिक काल में गद्य साहित्य का विकास हुआ। गद्य साहित्य अनेक रूपों में उपलब्ध है। ये रूप गद्य की विधाएँ कहलाती हैं, जो निम्नानुसार है – निबन्ध, कहानी, उपन्यास, नाटक, एकांकी, जीवनी, आत्मकथा आदि। ये सभी को दो वर्गों में विभाजित किया गया है।

महत्वपूर्ण बिन्दु– अभ्यास प्रश्न

प्रश्न– प्राचीन काल में किस कला का अभाव था?

उत्तर– प्राचीन काल में मुद्रण कला का अभाव था।

प्रश्न–आधुनिक काल में किस साहित्य का विकास हुआ?

उत्तर– आधुनिक काल में गद्य साहित्य का विकास हुआ है।

प्रश्न– गद्य साहित्य के अनेक रूप क्या कहलाए?

उत्तर– गद्य साहित्य के अनेक रूप गद्य की विधाएँ कहलाए।

(छोटे–छोटे प्रश्न पूछकर हम छात्रों का मूल्यांकन भी कर सकते हैं।)
इससे छात्रों में रोचकता व सजकता बनी रहती है।
गद्य की विधाओं को दो वर्गों में विभाजित किया गया है। पाठ्यक्रमानुसार विधाओं का वर्गीकरण इस प्रकार है।

मुख्य विधाएँ	गौण विधाएँ
निबन्ध	जीवनी
कहानी	आत्मकथा
उपन्यास	संस्मरण
नाटक	रेखाचित्र
एकांकी	पत्र
आलोचना	डायरी
	रिपोर्ताज
	साक्षात्कार

इन सभी विधाओं का सामान्य परिचय से छात्र प्रश्नोत्तर लिख सकेगें जिससे वे परीक्षा में अंक प्राप्त कर सकें।

निबन्ध विधा –निबन्ध विधा का परिचय हम प्रश्नोत्तर विधि से दे सकते हैं।

प्रश्न–1 निबन्ध की परिभाषा, प्रकार व दो निबन्धकारो के नाम रचना सहित लिखिए।

उत्तर–2 परिभाषा – निबन्ध वह रचना है जिसमें लेखक किसी भी विषय पर स्वच्छदापूर्वक अपने विचारों, भावों और अनुभवों को सजीवता व स्वाभाविकता के सामने व्यक्त करना है।

निबन्ध के प्रकार– निबन्ध सामान्यतः चार प्रकार के होते हैं।

(1) कथात्मक (2) वर्णनात्मक (3) विचारात्मक (4) भावात्मक

दो प्रमुख निबन्धकारों के नाम व प्रमुख रचना –

1. भारतेन्दु हरिशचन्द्र – 'कवि वचन सुधा'
2. प्रतापनारायण मिश्र – 'ब्राह्मण'

प्रश्न–2 नाटक, कहानी उपन्यास व एकांकी के तत्वों को लिखिए।

उत्तर– इन चारों प्रश्नों के उत्तर निम्न सूत्र दिया जा सकता है।

सूत्र – कपास दे भाउ –

क – कथानक

पा – पात्र परिचय

स – संवाद (कथोपकथन)

दे – देशकाल व वातावरण

भा – भाषाशैली

उ – उददेश्य

(अभिनय तत्व एकांकी व नाटक के लिए होता है क्योंकि इसका रंगमंच पर मंचन होता है।

इस सूत्र को छात्रों को अवश्य याद करा सकते हैं। सूत्र से छात्र चार प्रश्नों के उत्तर लिख सकता है।

गद्य की विधाएँ

➢ कहानी एवं उपन्यास में कोई चार अंतर –

क्र.	कहानी	उपन्यास
1.	कहानी छोटी होती है।	उपन्यास बड़ा होता है।
2.	कहानी में एक घटना का वर्णन होता है।	उपन्यास मे अनेक घटनाओं का वर्णन होता है।
3.	कहानी में कम पात्र होते हैं।	उपन्यास में अधिक पात्र होते हैं।
4.	'परीक्षा' प्रेमचंद द्वारा लिखित कहानी है।	'गोदान' प्रेमचन्द द्वारा लिखित उपन्यास है।

➢ एकांकी एवं नाटक में अंतर –

क्र.	एकांकी	नाटक
1.	एकांकी में एक ही अंक होता है।	नाटक में अनेक अंक होते हैं।
2.	एकांकी की कथावस्तु संक्षिप्त होती है।	नाटक की कथावस्तु विस्तृत होती है।
3.	एकांकी में पात्रों की संख्या कम होती है।	नाटक में पात्रों की संख्या अधिक होती है।
4.	'दीपदान' रामकुमार वर्मा द्वारा लिखित एकांकी हैं।	'चन्द्रगुप्त' जयशंकर प्रसाद द्वारा लिखित नाटक है।

➢ जीवनी और आत्मकथा में अंतर –

क्र.	जीवनी	आत्मकथा
1.	जीवनी किसी महापुरूष के जीवन पर लिखी जाती है।	आत्मकथा स्वयं के जीवन पर लिखी जाती है।
2.	जीवनी सत्य घटनाओं पर आधारित होती है।	आत्मकथा काल्पनिक भी हो सकती है।
3.	जीवनी में लेखक तटस्थ होता है।	आत्मकथा में लेखक की वैयक्तिकता झलक जाती है।
4.	जीवनी प्रेरणादायक होती है।	आत्मकथा से प्रेरणा प्राप्त हो यह आवश्यक नहीं है।

गतिविधि–

विभिन्न विधाओं को अपने स्वरूप के अनुसार गतिविधि कर समझाया जाये। जैसे–

– कहानी को कहकर एवं सुनकर छात्रो को बताना।

– एकांकी को विभिन्न पात्र बनाकर कक्षा में अभिनय करवाए जाये।

– आत्मकथा किसी विद्यार्थी के माध्यम से सुनकर अन्य विद्यार्थियों को समझाया जा सकता है।

अभ्यास हेतु निर्देश :– शिक्षक गद्य की विधाओं पर आधारित अन्य प्रश्नों का अभ्यास लोक शिक्षण संचालनालय द्वारा सत्र 2021–22 हेतु जारी किए गए प्रश्न बैंक के माध्यम से करवाएँ।

लेखक परिचय

जिससे छात्र परीक्षा में लेखक परिचय आसानी से लिख सकें व अंक प्राप्त कर सकें।

सहायक सामग्री –शिक्षक द्वारा–कुछ जीवनी व आत्मकथा लिखी हुई, लेखकों के चित्र, लेखक परिचय का लिखा हुआ प्रारूप चार्ट बनाकर लाया जा सकता है। प्रायः देखा जाता है कि शिक्षक द्वारा लेखक परिचय व कवि परिचय की चर्चा करने पर छात्र उत्तर देते समय भ्रमित हो जाते हैं। इस प्रकार की त्रुटियों को दूर करने के लिए लेखक परिचय की अवधारणा को छात्रों के समक्ष स्पष्ट करना चाहिए। जिससे वे लेखक परिचय लिखते समय भ्रमित न हों।

शिक्षण संकेत –लेखक परिचय पढ़ाते समय निम्न बातों का ध्यान रखना आवश्यक है –

1) लेखक की रचनाओं को सर्वप्रथम अच्छी तरह से याद करवाना जिससे उन्हें 1 अंक की प्राप्ति हो।

2) भाषा और शैली दो अलग–अलग शब्द हैं। अतः एक ही बिन्दु के अंतर्गत् लिखते समय इसे पैराग्राफ द्वारा अलग–अलग व्यवस्थित किया जाना चाहिए। भाषा (पैराग्राफ)

अनुच्छेद लिखते समय छात्रों को बताया जाए कि लेखक ने किस भाषा का प्रयोग किया है। कुछ अपनी रचनाओं में उर्दू, अरबी, अथवा फारसी भाषा का प्रभाव रहता है।

3) शैली के अंन्तर्गत छात्रों को शैली का अर्थ समझाना चाहिए। शैली का सामान्य अर्थ है लिखने का ढंग तरीका या परिपाटी। शैली कई प्रकार की होती है। कक्षा 9वी व 10वीं के छात्रों के लिए मुख्य रूप से 5 या 6 शैली का ही प्रयोग किया जाता है। ये छात्रों के लिए भी सरल हैं।

शैलियों के प्रकार – भावात्मक शैली, विवरणात्मक, विचारात्मक कथात्मक शैली, इन शैलियों को याद अवश्य कराया जाए।

प्रारूप–

लेखक परिचय –

1. रचनाएँ – कोई दो
2. भाषा – सहज, सरल, प्रवाहमयी, चंचलता शब्द–तत्सम, तद्भव, देशज या विदेशी मुहावरे व लोकोक्ति भाषा – आधुनिक खड़ी बोली, संस्कृत निष्ठ, व्याकरण सम्मत
3. शैली – सभी प्रकार की लिख सकते हैं।

लेखक परिचय

गतिविधि क्रमांक– 1

सर्वप्रथम विद्यार्थियों को विषयसूची या अनुक्रमाणिका (गद्य पाठ की) याद करवाई जाए। इससे छात्रों को लेखक की रचना याद हो जाएगी। इसके साथ ही तीन–तीन और रचना व रचनाकारों का चार्ट बनवाकर कक्षा में भी लगवा सकते हैं।

गतिविधि क्रमांक – 2

तालिका संबंधी शिक्षण संकेत :–

शिक्षक नीचे दी गई तालिका को छात्रों को समझाकर याद करवाएँ एवं उसकी समय–समय पर पुनरावृत्ति करवाएँ। इसके माध्यम से छात्र कवि परिचय संबंधी एक अंकीय व दो अंकीय प्रश्नों को हल करने में सक्षम हो सकेंगे। लेखक परिचय संबंधी प्रश्न लोक शिक्षण संचालनालय द्वारा जारी की गई सत्र 2021–22 की प्रश्न बैंक में दिए गए हैं। शिक्षक उन प्रश्नों का अभ्यास करवाएँ।

तालिका
लेखक परिचय : एक दृष्टि

क्रमांक	नाम, लेखक का जन्म/मृत्यु व रचनाएँ	विशेषताएँ		साहित्य में स्थान
		भाषागत	शैलीगत	
1	**प्रेमचन्द** **जन्म – 1880 ई.** **मृत्यु – 1936 ई.** **रचनाएँ –'सेवासदन', 'प्रेमाश्रय', 'गबन'**	• सरल व सहज भाषा का प्रयोग • बड़ी–बड़ी बात हेतु सरल शब्दावली का प्रयोग • तत्सम्, तद्भव अरबी एवं फारसी शब्दों का प्रयोग • मुहावरे एवं लोकोक्ति का प्रयोग	• भावात्मक शैली • मानवीय संवेदना पूर्ण शैली • वर्णनात्मक शैली • संवाद शैली।	उपन्यास विद्या में सम्राट की उपाधि से सम्मानित हुआ।
2	**श्यामाचरण दुबे** **जन्म – 1922 ई.** **मृत्यु – 1996 ई.** **रचनाएँ –** **'मानव और संस्कृति'** **'परम्परा और इतिहास बोध'**	• भाषा स्पष्ट और सहज • छोटे–छोटे वाक्यों में गंभीर भावों को स्पष्ट किया है। • मुहावरे व लोकोक्ति का प्रयोग	• शैली प्रभावपूर्ण है। • प्रश्नात्मक शैली का प्रयोग है। • विवरणात्मक शैली व विवेचनात्मक शैली का प्रयोग।	हिन्दी के गद्य साहित्य में आपका अतुलनीय योगदान है।
3	**चपला देवी**	• भाषा सरल, सजीव तथा प्रभावी है। • भाषा में तत्सम् शब्दावली है। • भाषा प्रभावपूर्ण है। • खड़ी बोली का प्रयोग।	• संवाद शैली का प्रयोग • रिपोर्ताज शैली का प्रयोग। • कहीं–कहीं संवाद शैली का प्रयोग। • प्रश्नात्मक शैली का प्रयोग।	देशभक्ति की भावना में उत्कृष्ट स्थान है।
4	**हरिशंकर परसाई** **जन्म – 1922 ई.** **मृत्यु – 1995 ई.** **रचनाएँ –** **'तट की खोज'** **'तिरछी रेखाएँ'**	• भाषा व्यंग्य प्रधान • सामान्य बोलचाल की भाषा का प्रयोग • भाषा की मारक क्षमता अनुपम है। • मुहावरे व लोकोक्तियों का प्रयोग।	• संवाद शैली का प्रयोग • व्यंग्यात्मक शैली की प्रधानता। • वर्णनात्मक शैली का प्रयोग • विचारात्मक व भावात्मक शैली भी दिखाई देती है।	हिन्दी के व्यंग्य साहित्य में आपका स्थान अग्रणी है।

गतिविधि क्रमांक – 3

रचनाएँ – प्रत्येक लेखक की रचनाएँ याद करवाई जाएँ और छात्रों को यह बताया जाए कि प्रत्येक लेखक का पूरा परिचय यदि याद न हों तो भाषा, शैली एवं साहित्य में स्थान के अंर्तगत् निम्नलिखित बिन्दुओं का प्रयोग किया जा सकता है –

भाषा – आपकी रचनाओं में खड़ी बोली हिन्दी का प्रयोग किया गया है। भाषा सहज, सरल एवं बोधगम्य है। भाषा में प्रभावशीलता है। तत्सम, तद्भव, देशी व विदेशी शब्दों का यथासम्भव प्रयोग हुआ है।

शैली – आपकी रचनाओं में मुख्यतः विचारात्मक, विवरणात्मक आलोचनात्मक शैलियों का प्रयोग किया है एवं मुहावरों और कहावतों का यथास्थान प्रयोग किया गया है।

साहित्य में स्थान– आप बहुमुखी प्रतिभा के धनी साहित्यकार हैं।

गद्य की व्याख्याः–

भूमिका :– सर्वप्रथम जाने कि गद्य क्या है? अपने विचारों को क्रमबद्ध ढंग से संप्रेषण को विद्या को गद्य कहते हैं। पद्य एवं गद्य में महत्वपूर्ण अंतर यही है कि गद्य विचार प्रधान विद्या है वह मस्तिष्क को प्रभावित करती है तथा पद्य भाव प्रधान विधा होकर हृदय को प्रभावित करती है। अतः गद्यांश की व्याख्या करते समय शिक्षक को कुछ बिन्दुओं का ध्यान रखना होगा।

शिक्षक कथन :– कुछ स्मरणीय महत्पूर्ण बिन्दु :–

1) गद्य विचार प्रधान होता है।
2) गद्य विद्या में भी वाचन के समय स्वर के उतार चढ़ाव का विशेष ध्यान रखना चाहिए।
3) सहायक सामग्री का अधिक से अधिक प्रयोग करना चाहिए।
4) विराम चिन्हों के अनुसार आदर्श वाचन कर अनुकरण वाचन करवाना चाहिए।

गतिविधि – लोक शिक्षण संचालनालय द्वारा जारी प्रश्न बैंक में दिए गए गद्यांशों में से किसी भी एक गद्यांश की व्याख्या शिक्षक सन्दर्भ, प्रसंग व विशेष लिखकर छात्रों को समझाएँ जिससे वे अन्य गद्यांशों की व्याख्या कर सकें।

विषय वस्तु एवं विचार बोध पर आधारित 02 अंकीय प्रश्न

शिक्षण गतिविधि –

शिक्षक पूर्व से पाठों के प्रश्नों को स्वयं तैयार करके कक्षा में ले जाएँ। पाठ के प्रमुख अनुच्छेदों में से प्रश्न तैयार कर प्रश्न लिखवा सकते हैं। इसके अलावा प्रश्नोत्तर विधि, व्याख्यान विधि, चर्चा विधि एवं संवाद विधि का प्रयोग दो अंक के प्रश्नों को तैयार करवाने हेतु किया जाए।

इकाई – 1 पद्य खण्ड

- **निर्धारित इकाई से 1–1 अंक के 7 प्रश्न तथा 2–2 अंक के 3 प्रश्न तथा 04 अंक का 1 प्रश्न परीक्षा में पूछा जाएगा।**
- **क्षितिज भाग 1 के काव्यखंड से 'वाख' , 'चन्द्रगहना से लौटती बेर' , 'यमराज की दिशा', 'बच्चे काम पर जा रहे हैं पाठ से परीक्षा में कोई प्रश्न नहीं पूछा जाएगा।**

शिक्षण संकेत–

1. शिक्षक छात्रों को विषय के महत्वपूर्ण अंशों को सरल गतिविधियों के माध्यम से समझाएँ।
2. निदानात्मक कक्षाओं में अध्ययन कराते समय पाठ्यक्रमानुसार (टी.एल.एम.) का प्रयोग अवश्य करें।
3. शिक्षक बीच–बीच में छात्रों का मूल्यांकन करते रहें।
4. यह इकाई काफी बड़ी है। निदानात्मक कक्षाओं हेतु महत्वपूर्ण अंशों को लिया गया है, जिससे छात्र लाभान्वित हो सकें। प्रश्नों के उत्तर शब्द सीमा में देना है। 2 अंक के लिए लगभग 30 शब्द, 4 अंक के लिए लगभग 120 शब्द हैं।

पद्य खण्ड

पद्य साहित्य का विकास

सहायक सामग्री–कुछ रचनाकारों एवं रचना के चित्र व पुस्तकें।

रचनाओं के चित्र दिखाकर व कुछ रचना के बारे में छात्रों से पूछने पर उत्तर आ सकता कि यह पुराने कवियों के चित्र हैं। हो सकता है कि कुछ छात्र बता पाएँगे, कि प्राचीन भाषा उतनी परिमार्जित नहीं थी जितनी कि वर्तमान में आधुनिक हिन्दी खड़ी बोली हो गई है। तब छात्रों को बताया जाए कि भाषा का आधुनिक रूप किन–किन परिस्थितियों एवं पड़ावों से गुजरा है। इसी अध्ययन का नाम इतिहास है।

आइए जाने –

हिन्दी साहित्य को चार भागों में विभाजित किया गया है–

1. वीरगाथा काल 1050 से 1375 संवत् तक
2. भक्ति काल 1375 से 1700 संवत् तक
3. रीतिकाल 1700 से 1900 संवत् तक
4. आधुनिक काल 1900 से अब तक

भक्ति काव्य :

भक्तिकाल का परिचय तालिका द्वारा समझाया जा सकता है। यह सरल विधि है। इसे श्यामपट्ट पर बनाया जा सकता है।

भक्तिकाल

- सगुण धारा
  - रामभक्ति शाखा → प्रमुख कवि व रचना तुलसीदास रचना रामचरित मानस है।
  - कृष्ण भक्ति शाखा → प्रमुख कवि व रचना सूरदास रचना सूरसागर है।
- निर्गुण धारा
  - ज्ञानाश्रयी शाखा → प्रमुख कवि व रचना कबीरदास रचना बीजक है।
  - प्रेमाश्रयी शाखा → प्रमुख कवि व रचना मलिक मो. जायसी रचना पद्मावत है।

इस तालिका का अभ्यास छात्रों को अधिक से अधिक करवाया जा सकता है। कक्षा में चार्ट बनाकर भी लगा सकते हैं। इससे छात्र भक्तिकाल को अच्छी तरह से जान लेंगे व याद कर लेंगे तथा परीक्षा में आए प्रश्नों के उत्तर सरलता से लिख सकेंगे।

गतिविधि– शिक्षक यह गतिविधि छात्रों द्वारा करवा सकते हैं। एक छात्र भक्तिकाल का परिचय दे कि मैं भक्तिकाल हूँ। मेरी दो शाखाएँ हैं। जिनके नाम सगुण धारा व निर्गुण धारा हैं। दो अन्य छात्र ये दोनों धाराएँ बनकर आएँगे और अपना अपना परिचय देंगे अन्त में ये भी कहेंगे कि हमारी भी दो–दो धाराएँ हैं, राम भक्ति व कृष्ण भक्ति, ज्ञानश्रयी व प्रेमाश्रयी शाखा है, वे अपनी धारा व अपने प्रमुख कवि व रचना का नाम, कुछ विशेषताओं के बारे में भी बता सकते हैं। इस प्रकार छोटी सी **अभिनय विधा** के द्वारा भक्तिकाल नाटिका का मंचन कक्षा में करवाया जा सकता है। अन्त में मीरा के पद का गायन करें।

गतिविधि– शिक्षक द्वारा मीरा के पदों का सस्वर गायन –

पायों जी मैंने रामरतन धन पायो,

वस्तु अमोलक दी मेरे सदगुरू, किरपा करि अपनायौ,

(छात्र दोहरा भी सकते है)

हमने क्या जाना – भक्ति से क्या आशय है ?

सगुण धारा – इस धारा के कवियों ने ईश्वर के साकार रूप की लीलाओं का वर्णन किया है। इसकी दो धाराएँ हैं।

(1) रामभक्ति शाखा (2) कृष्ण भक्ति शाखा।

रामभक्ति शाखा– इसमें कवियों ने राम को आदर्श मानकर रचना की। इस शाखा के प्रतिनिधि कवि गोस्वामी तुलसीदास हैं। अन्य कवि नाभादास, अग्रदास, प्राणचंद चौहान आदि हैं।

कृष्ण भक्ति शाखा– जिन कवियों ने कृष्ण की लीलाओं और उनके जीवन पर आधारित रचनाएँ की वे कृष्ण भक्ति कवि कहलाए। महाकवि सूरदास इस शाखा के प्रतिनिधि कवि हैं। अन्य कवि नन्ददास, कृष्णदास, कुम्भनदास हैं।

निर्गुण धारा– भक्तिकाल की दूसरी धारा निर्गुण धारा है। इस धारा के कवियों ने ईश्वर के निराकार रूप को अपने काव्य में स्थान दिया है। ये भी दो धाराओं में विभक्त हैं।

ज्ञानाश्रयी शाखा– ज्ञान को ही ईश्वर मानकर जिन्होंने काव्य साधना की वे ज्ञानाश्रयी शाखा के कवि कहलाए। इस शाखा के प्रतिनिधि कवि 'कबीरदास' जी हैं। इनका प्रतिनिधि ग्रन्थ बीजक है। अन्य कवि रैदास, गुरूनानक हैं।

प्रेमाश्रयी शाखा – जिन कवियों ने प्रेम के माध्यम से ईश्वर तक पहुँचने का मार्ग माना वे इस शाखा के कवि कहलाए। इसके प्रतिनिधि कवि मलिक मोहम्मद जायसी हैं। इनका प्रसिद्ध ग्रन्थ पद्मावत है। अन्य कवि मंझन, कुतुब शेख व नबी उस्मान हैं।

भक्तिकाल की विशेषताएँ –

(अ) साकार एवं निराकार ब्रह्म की उपासना।

(ब) रहस्यवादी कविता का प्रारंभ।

(स) सदाचार की प्रेरणा।

(इ) समस्त काव्य शैलियाँ।

(प) शान्त रस की प्रधानता।

(फ) दास्य एवं सख्य भावना।

आधुनिक काल			
क्रमांक	आधुनिक काल के कवि का नाम व रचनाएँ	विशेषताएँ	
		कालपरिचय	शैलीगत
1	**छायावाद** **कवि का नाम –** **जयशंकर प्रसाद** **रचनाएँ – 'कामायनी', 'आँसू'**	जब आत्मा की छाया परमात्मा पर पड़ती है व परमात्मा की छाया आत्मा पर पड़ती है तब छायावाद होता है।	• व्यक्तिवाद की प्रधानता • श्रृंगार की भावना • प्रकृति चित्रण • सौन्दर्यानुभूति।
2	**प्रगतिवाद –** **नागार्जुन – 'युगधारा'** **त्रिलोचन – 'धरती'**	प्रगतिवाद में समाज के यथार्थ का चित्रण किया गया है।	• शोषितों से सहानुभूति • ईश्वर के प्रति अनास्था • नारी शोषण के प्रति मुक्ति की आवाज • प्रतीकों का प्रयोग।
3	**नई कविता** **भवानी प्रसाद**	जीवन के प्रत्येक क्षण के महत्व को माना गया है व्यक्ति की सूक्ष्म संवेदनाओं का वर्णन किया गया है।	• लघुमानवतावाद की प्रतिष्ठा • प्रयोगों में नवीनता • व्यंग्य प्रधान रचनाएँ • क्षणवाद को महत्व।

गतिविधि : हमारे यहाँ वर्ष भर धार्मिक कार्यक्रम का आयोजन होता है। यह कार्यक्रम घर परिवार व हमारे आसपास के स्थानों में भी आयोजित होता है। जिसमें भक्तिकालीन भजन, गीत आदि भी सुने जाते हैं। कक्षा में छात्रों से भजन प्रतियोगिता भी करवा सकते हैं।

• कबीर के दोहों का गायन व संकलन भी किया जा सकता है।

• वर्तमान समय में शिक्षक अपने पास मोबाईल से स्वर लय युक्त भक्तिकालीन गीत का अभ्यास छात्रों को करवा सकते हैं।

• कवियों के चित्र भी बनाकर कक्षा में लगवा सकते हैं। गूगल सर्च इंजिन में कवियों के नाम लिखकर चित्र प्राप्त कर सकते हैं, इसे अपनी कक्षा में लगा सकते हैं।

• वीरता हेतु देश भक्ति गीतों की प्रतियोगिता भी करवा सकते हैं। **26 जनवरी व 15 अगस्त** पर वीरों की कहानियाँ भी सुना सकते हैं।

अभ्यास के प्रश्नों के गृहकार्य में दे सकते हैं।

मूल्यांकन – प्रश्नों का लिखित व मौखिक मूल्यांकन करके, शिक्षक जिन प्रश्नों को छात्र हल नहीं कर पाएँ, उन्हें पुनः याद करवाने का प्रयत्न करें।

अभ्यास हेतु निर्देश – शिक्षक पद्य साहित्य के इतिहास संबंधी प्रश्नों का अभ्यास लोक शिक्षण संचालनालय द्वारा सत्र 2021–22 हेतु जारी किए गए प्रश्न बैंक के माध्यम से करवाएँ।

कवि परिचय

शिक्षण संकेतः–

(1) प्रमुख कवि व उनकी रचनाओं (दो–दो) को याद करवाएँ।

(2) भावपक्ष में निहित बिन्दु जैसे – रस की प्रधानता, कवि द्वारा भावनायें, विचारों, भाषा शैली भी आदि भी इसमें लिख सकते हैं।

→ भावपक्ष में कवि ने पाठ्यक्रम में जो कविता लिखी है उस पाठ के प्रश्नों के उत्तर भी लिख सकते हैं।

कलापक्ष– (1) कलापक्ष में कवि द्वारा प्रयुक्त छन्द, अलंकार, गुण के बारे लिखा जाता है।

(2) कवि द्वारा प्रयुक्त काव्य शिल्प या सौन्दर्य भी कलापक्ष में निहित होता है।

साहित्य में स्थान– सभी कवि हमारे लिए सम्माननीय हैं। अतः सभी का स्थान सर्वोपरि है।

अभ्यास के प्रश्नः–शिक्षक छात्रों से मौखिक प्रश्न अवश्य करें।

प्रश्न.1 भावपक्ष में किसकी प्रधानता रहती है ?

उत्तर भावपक्ष में रस की प्रधानता रहती है।

प्रश्न.2 भावपक्ष में निहित बिन्दु कौन–कौन से होते हैं ?

उत्तर कवि के विचार कवि की भावनाएँ, कवि द्वारा प्रयुक्त भाषा शैली।

प्रश्न.3 भावपक्ष में पाठ से हम क्या लिख सकते हैं ?

उत्तर भावपक्ष में पाठ से प्रश्नों के उत्तर लिख सकते हैं।

प्रश्न.4 कलापक्ष में किन बिन्दुओं को लिखा जा सकता है ?

उत्तर कलापक्ष में कवि द्वारा प्रयुक्त छन्द, अलंकार, गुण के बारे में लिखा जाता है।

प्रश्न.5 साहित्य में स्थान से क्या आशय है ?

उत्तर सभी कवि हमारे लिए आदरणीय है। अतः सभी का स्थान साहित्य जगत में सर्वोपरि है।

विशेषः–

इन प्रश्नों को कक्षा कार्य की उत्तर पुस्तिका में छात्रों को अवश्य लिखवाएँ व याद करवाएँ। इन प्रश्नों के उत्तर से वे कवि परिचय लिखने में भ्रमित नहीं होंगे।

प्रारूप को लिखने का अभ्यास छात्रों से अवश्य करवाएँ। कवि परिचय का प्रारूप निम्नानुसार है।

→ **दो रचनाएँ**

→ **भावपक्ष**
(भावनात्मक बोध की अभिव्यक्ति व रस, पर)

→ **कला पक्ष**
(कला रचना, भाषा शैली छन्द, अलंकार व व्याकरण पक्ष)

→ **साहित्य में स्थान**

कवि परिचय की गतिविधि

गतिविधि क्रमांक – 1

(1) दो रचनाएँ
(2) भावपक्ष
(3) कलापक्ष
(4) साहित्य में स्थान

इन चारों बिन्दुओं को कक्षा के चार समूह में विभाजित करके प्रत्येक समूह को एक–एक बाँट दिए जाएँ। चारों समूहों में से एक–एक छात्र को दिए गए बिन्दुओं को क्रमवार खड़े करके, देखकर सुनाने के लिए कहें। इस प्रकार कवि का साहित्यिक परिचय छात्रों को याद करने में सरलता होगी।

इनका अभ्यास छात्रों को अवश्य करवाएँ जिससे छात्र कवि परिचय लिख सकें।

उदाहरण के रूप में यहाँ तुलसीदास जी का साहित्यिक परिचय प्रस्तुत है–

तुलसीदास

रचनाएँ–'रामचरितमानस', 'कवितावली', 'दोहावली', 'जानकी मंगल', 'पार्वती मंगल' आदि।

भावपक्ष– भक्त शिरोमणि तुलसीदास उच्च कोटि के कवि थे। राम के मंगलकारी रूप को समाज के सामने प्रस्तुत कर समाज को दिशा प्रदान करने में आपकी महत्वपूर्ण भूमिका है। रामभक्ति शाखा के प्रतिनिधि तुलसीदास का सम्पूर्ण काव्य राम की भक्ति भावना से ओत–प्रोत है। शैव, वैष्णव, शाक्त एवं समाज के अन्य वर्गों को जोड़ने का प्रयास किया है।

कलापक्ष– आपकी रचनाओं में मुख्यतः अवधी तथा बृजभाषा का प्रयोग है। दोहा, चौपाई, सवैया हरिगीतिका आपके प्रिय छन्द है। अनुप्रास, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा आदि अलंकारो की छटा दृष्टव्य है। इन्होंने अपने काव्य में सभी रसों का परिपाक किया है।

साहित्य में स्थान– भारतीय संस्कृति और सामाजिक मूल्य के कुशल चितेरे हैं। तुलसीदास के साहित्य का जगत में अनुपम स्थान है।

गतिविधि क्रमांक – 2

तालिका संबंधी शिक्षण संकेत :–

शिक्षक नीचे दी गई तालिका को छात्रों को समझाकर याद करवाएँ एवं उसकी समय–समय पर पुनरावृत्ति करवाएँ। इसके माध्यम से छात्र कवि परिचय संबंधी एक अंकीय व दो अंकीय प्रश्नों को हल करने में सक्षम हो सकेंगे। कवि परिचय संबंधी प्रश्न लोक शिक्षण संचालनालय द्वारा जारी की गई सत्र 2021–22 की प्रश्न बैंक में दिए गए हैं। शिक्षक उन प्रश्नों का अभ्यास करवाएँ।

तालिका

कवि परिचय : एक दृष्टि

क्रमांक	नाम, कवि/जन्म/मृत्यु व रचनाएँ	विशेषताएँ		साहित्य में स्थान
		भाव पक्ष/भाव सौन्दर्य	कला पक्ष/शिल्प सौन्दर्य	
1	**कबीरदास** **जन्म – 1398** **मृत्यु – 1455** **रचनाएँ – 'बीजक' (साखी, पद, रमैनी)**	• बाहरी आडम्बरों का विरोध • सच्चे स्वरुप की पहचान • भावों में निष्पक्षता • उपासना पर बल।	• घुमक्कड़ी भाषा • दोहा छन्द का प्रयोग • व्यंग्यात्मक शैली • रुपक अलंकारों का प्रयोग	कबीरदास जी का साहित्य में उत्कृष्ट स्थान है।
2	**रसखान** **जन्म – 1548 ई.** **मृत्यु – 1628 ई.** **रचनाएँ – 'सुजान–रसखान', 'प्रेमवाटिका'**	• ब्रजभूमि के प्रति अनुराग • रसों के खान की उपमा • राधा–कृष्ण की लीलाओं का वर्णन • श्रृंगार रस की प्रधानता।	• दोहा, कविता, सवैया छन्द • काव्य की भाषा सरल सहज • ब्रजभाषा का प्रयोग • काव्य का प्रमुख विषय श्री कृष्ण	साहित्य में सर्वोच्च स्थान है।
3	**माखनलाल चतुर्वेदी** **जन्म – 1889 ई.** **मृत्यु – 1968 ई.** **रचनाएँ – 'हिम किरीटनी', 'हिम तरंगिनी'**	• राष्ट्रीय भावनाओं से युक्त कविताएँ • रचनाएँ, बलिदान, संघर्ष से युक्त • ब्रिटिश शासन की बर्बरता	• रचनाएँ खड़ी बोली में है • तत्सम तद्भव विवेशी शब्द • रचनाएँ मुक्तक काव्य में • वीर रस का प्रयोग	साहित्य में महत्वूपर्ण स्थान है।
4	**सुमित्रानन्दन पंत** **जन्म – 1900** **मृत्यु – 1977** **रचनाएँ – 'वीणा', 'ग्रंथि'**	• प्रकृति व मनुष्य के विविध संबंध। • प्रकृति के सुक्ष्म व कोमल रुप। • शोषक वर्ग के प्रति विद्रोह	• काव्य भाषा सरल व सहज • संस्कृत के शब्द व अलंकारों का सुंदर प्रयोग • खड़ी बोली का प्रयोग	पंत जी का साहित्य में उत्कृष्ट स्थान है।
5	**सर्वेश्वर दयाल सक्सेना** **जन्म – 1927** **मृत्यु – 1983** **रचनाएँ – 'बाँस का पुल', 'एक सूनी का गाँव'**	• प्रकृति प्रधान रचना • ग्रामीण लोक जीवन की प्रधानता • प्राचीन संस्कृति की झलक	• रुपक अलंकारों का प्रयोग • काव्य में खड़ी बोली का प्रयोग • प्रतीक व बिम्ब का प्रयोग • मानवीकरण अलंकार	साहित्य में महत्वूपर्ण स्थान है।

पद्य की व्याख्या

सहायक सामग्रीः–

कविता की पंक्तियों की तालिकाएँ, कवियों के चित्र, आदि।

शिक्षण संकेतः– शिक्षक कक्षाओं में पद्यांश की सन्दर्भ व प्रसंग सहित व्याख्या करवाते हैं। इसी श्रृंखला को आगे बढ़ाते हुए कुछ मुख्य बिन्दुओं पर विचार कर सकते हैं।

बिन्दु–1 पद्य के कवि व पाठ का नाम सर्वप्रथम याद करवाने का प्रयास करें।

2. छात्र को यह अनुभूति करवाने का प्रयास करें कि कवि ने किन भावों व विचारों से यह पंक्तियाँ लिखी है।
3. सन्दर्भ व प्रसंग पर ही व्याख्या आश्रित होती है। इन बिन्दुओं पर विशेष ध्यान दें।
4. व्याख्या के लिए पद्य में आए कठिन शब्दों के प्रसंगानुकूल अर्थ को स्पष्ट करें।
5. विशेष के लिए– काव्य सौन्दर्य (रस, छन्द, अलंकार, आदि) को लिखा जा सकता है।

गतिविधि– कार्ड सीटों में शब्द व अर्थ (नजदीकी) की पंक्तियाँ बनाकर शब्द गड्डी व अर्थ गड्डी से छात्रों को एक–एक पर्ची को उठाने को कहें। शब्द – अर्थ के मेल करने एक साथ पास–पास खड़े करें। अनमेल होने पर शब्द पंक्ति व अर्थ पंक्तियों में खड़े होने कहें। प्रक्रिया पूरी होने पर क्रमशः शिक्षण सामग्री के रूप में शब्द– अर्थ जोड़े का प्रयोग करें।

टीप – सांकेतिक पद्यांश को उद्धृत करते समय चार–पाँच चित्र क्रमशः ग्रीन बोर्ड या कक्षा–कक्ष या परिसर में लगाने का प्रयास करें। जिसे देख कर छात्र कुछ कुछ स्वयं ही जानने समझने की कोशिश में सफल होगा साथ ही रचनाकार का चित्र बनवाकर (छात्रों से) या अन्य स्त्रोतों से प्राप्त कर भी प्रदर्शित करना चाहिए चित्र रूप में देखी गई सामग्री ज्यादा समय तक मस्तिष्क में टिकती है।

धीरे–धीरे बच्चे स्वतः ही व्याख्या करने में समर्थ होंगे।

मूल्यांकन– शिक्षक के लिए यह प्रक्रिया अनिवार्यतः प्रत्यक्ष/अप्रत्यक्ष रूप से कर सुधार व सुझाव दिए जाने चाहिए।

भाव एवं विषय वस्तु पर आधारित 2 अंकीय प्रश्न

गतिविधि क्रमांक –1

कुछ प्रश्नों को छात्र पूर्व से ही याद करके आएगे तथा सभी बारी–बारी से प्रश्नों के उत्तर, मौलिक अभिव्यक्ति में या सरल शब्दों में देने का प्रयास करेंगे। सभी छात्रों से दोहराने की गतिविधि भी करा सकते हैं।

गतिविधि क्रमांक –2

समूहवार दो–दो जोड़े बनाकर वस्तुनिष्ठ प्रश्नों की गतिविधि का प्रयोग हम 2 अंकीय प्रश्नोत्तरी में भी कर सकते हैं। भाषायी कौशलों में सबसे प्रमुख कौशल ध्यान से सुनना, व सुनकर छात्रों को प्रश्नोत्तर याद होगा। यहाँ पर हम यह गतिविधि छात्रों के समूह बनवाकर करेंगे।

एक छात्र अपने पास में बैठे छात्र से समूह बनाएँगे। दो–दो के जोड़ों में हम यह गतिविधि करेंगे।

- एक छात्र प्रश्न बोलेगा, दूसरा छात्र उत्तर सुनाएगा।
- पहले देखकर यह गतिविधि होगी बाद में बिना देखे कर एक दूसरे को सुनाएँगे।
- इन्हीं प्रश्नों को दो बार देखकर लिखेंगे। एक बार बिना देखे लिखने का प्रयास करेंगे। सही उत्तर लिखने पर स्वयं अंक देंगे। गलत लिखने पर पुनः लिखेंगे।
- शिक्षक 5 या 10 प्रश्न लिखने पर मूल्यांकन करके हस्ताक्षर करेंगे।
- शिक्षक अपने रजिस्टर में अंकित अवश्य करें कि किस छात्र ने कितने प्रश्न याद किए हैं।
- कठिन प्रश्नों के उत्तरों को शिक्षक से पूछ सकते हैं।

इकाई 4 – भाषा बोध

- **निर्धारित इकाई से 1–1 अंक के 6 प्रश्न, 2 अंक का 1 प्रश्न तथा 3 अंक का 1 प्रश्न परीक्षा में पूछा जाएगा।**

शिक्षण–संकेत

1. शिक्षक विद्यार्थियों को संबंधित विषयवस्तु के सभी अंशों को सरल एवं रोचक गतिविधियों के माध्यम से समझाएँ।
2. निदानात्मक कक्षाओं में अध्यापन कराते समय विषय से संबंधित टी.एल.एम. के रूप में यू–ट्यूब पर डले हुए वीडियो का अवश्य प्रयोग करें। प्रोजेक्टर न होने की स्थिति में शिक्षक कक्षा को समूहों में विभाजित कर क्रमशः प्रत्येक समूह को वीडियो दिखाएँ।
3. पाठ्यपुस्तक में दी गई संबंधित विषयवस्तु के अध्यापन के साथ शिक्षक निदानात्मक कक्षाओं में इस मॉड्यूल में दी गई विषयवस्तु का पुनः पुनः अध्यापन एवं अभ्यास कराएँ।

गतिविधि क्रमांक–1

शिक्षक छात्रों का गोल घेरा बनाएँ। सभी छात्र गोल घेरे में आ जाएँ। उसके बाद उपसर्ग एवं प्रत्यय की परिभाषा सभी गोल समूह के छात्रों को बताएँ। इसके बाद उपसर्ग एवं प्रत्यय की परिभाषा सभी गोल समूह के छात्रों के गोल घेरे के बीच में रखें। छात्र गोल घेरे में चलते जाएँ और एक–एक पर्ची उठाते जाएँ। सभी छात्रों के हाथ में जब एक पर्ची आ जाए तब शिक्षक प्रत्येक छात्र से पूछें कि आपके पास

उपसर्ग की पर्ची है या प्रत्यय की ? फिर पर्ची की पहचान करने के बाद जिस शब्द की पर्ची मिली है उसके नाम का उल्लेख करें। जैसे–अनुवाद या झगड़ालू। अब शिक्षक निर्देश दें कि अपने शब्द में से उपसर्ग, प्रत्यय अलग–अलग कीजिए। इस प्रकार गतिविधि के माध्यम से छात्र उपसर्ग और प्रत्यय की अवधारणा को सीख जाएँगे।

गतिविधि क्रमांक–2

आओ खोजें –

निम्नलिखित शब्दों के दो–दो पर्यायवाची शब्द वर्ग तालिका से छाँटकर बनाएँ –

सुधा, विश्व, झण्डा, माता, शत्रु, तन

अमृत	ध्वज	देह
जगत	अभिय	पताका
जननी	संसार	बेटी
अरि	शरीर	माँ

गृह–कार्य –

1. कोई पांच उपसर्ग और पांच प्रत्यय शब्द खोजकर उनकी सूची पृथक–पृथक बनाएँ।
2. पर्यायवाची शब्द की परिभाषा बताते हुए कमल, आकाश, नदी के दो–दो पर्यायवाची शब्द लिखिए –
3. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए –

सरल, अमृत, दिन, भाई।

मूल्यांकन–

(अ) शिक्षक वर्कशीट के माध्यम से छात्रों का मूल्यांकन करें –

निर्देश : रिक्त स्थानों में तीन पर्यायवाची शब्द खोजकर लिखो।

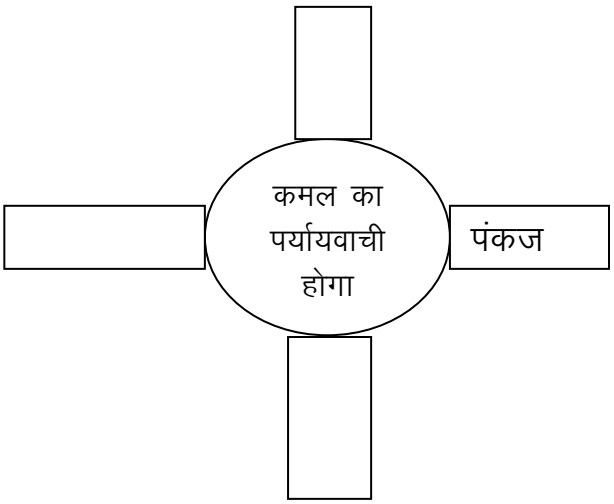

(ब) आओ खोजकर सीखें–

निर्देश– समूह (अ) में दिए गए मुहावरों के अर्थ समूह (ब) से मिलान करें

(अ)	(ब)
1. आग में घी डालना	1. धोखा देना
2. उल्टी गंगा बहाना	2. बैचेनी से प्रतीक्षा करना
3. चकमा देना	3. पोल (भेद) खुलना
4. तारे गिनना	4. क्रोध भड़कना
5. कलई खुलना	5. अनहोनी बातें करना

2 एवं 3 अंकीय प्रश्न –

गतिविधि क्रमांक –1

कुछ प्रश्नों को छात्र पूर्व से ही याद करके आएँगे तथा सभी बारी–बारी से प्रश्नों के उत्तर, मौलिक अभिव्यक्ति में या सरल शब्दों में देने का प्रयास करेंगे। सभी छात्रों से दोहराने की गतिविधि भी करा सकते हैं।

गतिविधि क्रमांक –2

समूहवार दो–दो जोड़े बनाकर वस्तुनिष्ठ प्रश्नों की गतिविधि का प्रयोग हम 2 अंकीय प्रश्नोत्तरी में भी कर सकते हैं। भाषायी कौशलों में सबसे प्रमुख कौशल ध्यान से सुनना, व सुनकर छात्रों को प्रश्नोत्तर याद होगा। यहाँ पर हम यह गतिविधि छात्रों के समूह बनवाकर करेंगे।

- एक छात्र अपने पास में बैठे छात्र से समूह बनाएँगे। दो–दो के जोड़ों में हम यह गतिविधि करेंगे।
- एक छात्र प्रश्न बोलेगा, दूसरा छात्र उत्तर सुनाएगा।
- पहले देखकर यह गतिविधि होगी बाद में बिना देखे एक दूसरे को सुनाएँगे।
- इन्हीं प्रश्नों को दो बार देखकर लिखेंगे। एक बार बिना देखे लिखने का प्रयास करेंगे। सही उत्तर लिखने पर स्वयं अंक देंगे। गलत लिखने पर पुनः लिखेंगे।
- शिक्षक 5 या 10 प्रश्न लिखने पर मूल्यांकन करके हस्ताक्षर करेंगे।
- शिक्षक अपने रजिस्टर में अंकित अवश्य करें कि किस छात्र ने कितने प्रश्न याद किए हैं।
- कठिन प्रश्नों के उत्तरों को शिक्षक से पूछ सकते हैं।

अभ्यास हेतु निर्देश – शिक्षक भाषा बोध संबंधी 2 एवं 3 अंकीय प्रश्नों का अभ्यास लोक शिक्षण संचालनालय द्वारा सत्र 2021–22 हेतु जारी किए गए प्रश्न बैंक के माध्यम से करवाएँ।

इकाई 5 – काव्यबोध

- **निर्धारित इकाई से 1–1 अंक के 7 प्रश्न तथा 2–2 अंक के 2 प्रश्न तथा 3 अंक का 1 प्रश्न परीक्षा में पूछा जायेगा।**

शिक्षण संकेतः–

- शिक्षक कक्षा को आवश्यकतानुसार 4 समूहों में विभाजित कर काव्यबोध संबंधी पाठ्यवस्तु का अध्यापन एवं बोध कराएँ।
- शिक्षक अलग–अलग समूहों को शिक्षण सामग्री के अनुरूप नाम दें यथा–रस समूह, छन्द समूह आदि।
- प्रत्येक समूह को उसके नाम के अनुसार विषयवस्तु वितरित कर उदाहरण और संबंधित प्रश्न पत्र तैयार करें और विद्यार्थियों को ऐसा करने हेतु प्रोत्साहित करें। प्रश्नों का प्रकार वस्तुनिष्ठ (7 अंक), लघुउत्तरीय प्रश्न (2 अंक) एवं लघुउत्तरीय प्रश्न (3 अंक) के अनुरूप हों।
- प्रश्न तैयार होने पर शिक्षक द्वारा उन प्रश्नों के स्तर की जाँच की जाए एवं आवश्कतानुसार पुनः मार्गदर्शन दिया जाए।
- प्रश्नों के परीक्षा पद्धति एवं ब्लूप्रिंट के अनुसार तैयार होने पर कक्षा में समूहों के बीच प्रश्नमंच कराया जाए, जिसमें एक समूह दूसरे समूह से (निर्धारित तीनों–वस्तुनिष्ठ, लघु उत्तरीय प्रश्न, 2 अंक एवं लघुउत्तरीय प्रश्न 3 अंक) प्रश्न पूछे और तीसरा समूह चौथे समूह से। आगे भी यही प्रक्रिया दोहराई जाए।

'काव्य के भेद' हेतु गतिविधि –

(1) पाठ्यपुस्तक में आए मुक्तक काव्य के उदाहरण की पहचान कराना।

(2) शिक्षक पाठ्य पुस्तक से उदाहरण लेकर काव्य के आंतरिक एवं बाह्य स्वरुप के निर्धारक कारक स्पष्ट कर छात्रों से पूछें।

(3) महाकाव्य और खंडकाव्यों के नाम व उनके रचनाकारों के नाम लिखिए।

'रस' हेतु गतिविधि–

1. 10 कार्डों में रसों के नाम लिखकर छात्रों को समूह में बांट दें। फिर उनसे रस का स्थायी भाव तथा परिभाषा और उदाहरण पूछें।
2. चार्ट पेपर बनवाएँ जिसमें रसों के नाम एवं उनके स्थायी भाव लिखे हों।
3. रस के अंगों का चार्ट पेपर बनवाकर कक्षा में लगवाएँ।
4. रसों के अन्य उदाहरण छात्रों से पूछें।

छन्द

1. **छन्द की परिभाषा**– ''कविता के शब्दिक अनुशासन का नाम छन्द है।''
2. **छन्द की परिभाषा**– ''जिस काव्य में मात्रा, वर्ण, गण, यति, लय आदि का विचार करके शब्द योजना की जाती है उसे छन्द कहते हैं।''

   उदा. – वरषा विगत शरद ऋतु आई, लक्ष्मण देखहु परम सुहाई

   फूले कांस सकल महि छाई, जनु वरषा कृत सकत बुढ़ाई।

मात्रा लगाने के नियम –

1. सभी ह्रस्व स्वरों और उनके योग से उच्चारित वर्णों पर लघु मात्रा लगती है।
2. दीर्घ स्वरों और उनके सहयोग से उच्चारित व्यंजनों पर गुरू मात्रा लगती है।
3. अनुस्वार और विसर्ग युक्त वर्णों पर गुरु मात्रा लगती है चाहें वे हस्व वर्ण ही हों।
4. संयुक्त अक्षर से पूर्व के वर्ण पर गुरु मात्रा लगती है। यदि शब्द का पहला वर्ण संयुक्त है तो उस पर वर्ण के अनुसार मात्रा लगेगी अर्थात् यदि वह लघु वर्ण है तो लघु और दीर्घ वर्ण है तो गुरू मात्रा लगेगी।
5. संयुक्ताक्षर के पूर्व के वर्ण पर यदि बल नहीं पड़ता तो उसकी मात्रा लघु ही रहेगी।

गण का स्वरुप :–

तीन वर्णों के समूह को गण कहते हैं। वर्णिक छन्दों में वर्ण की गणना की जाती है। उन वर्णों की लघुता और गुरूता के विचार से गणों के आठ रुप होते हैं।

अलंकार के भेद

शब्दालंकार

(जहाँ शब्दों के प्रयोग से सौंदर्य में वृद्धि होती है)

अनुप्रास
(एक ही वर्ण की दो या दो से अधिक बार आवृति)
उदाहरण–रघुपति राघव राजाराम ''र'' वर्ण की आवृति

यमक
(जहाँ एक ही शब्द बार–बार आए किन्तु उसका अर्थ अलग–अलग हो।
उदाहरण–काली घटा का घमण्ड घटा)
घटा–घट जाना।
घटा–काले बादल।

श्लेष
(एक ही शब्द के दो या दो से अधिक अर्थ होते है।
उदाहरण–मंगन को देखि पट देत बार–बार है। पट–वस्त्र, पट–दरवाजा)

अर्थालंकार

(जहाँ शब्दों के अर्थ से चमत्कार उत्पन्न होता है)

उभयालंकार

(जहाँ शब्द और अर्थ दोनों के प्रयोग से चमत्कार उत्पन्न होता है)

उपमा
(जहाँ एक वस्तु अथवा प्राणी की तुलना उसी के सदृश्य के कारण प्रसिद्ध वस्तु या प्राणी से की जाती है)
उदाहरण–सीता का मुख चन्द्रमा के समान है।

रूपक
(उपमेय में उपमान का आरोप)
उदाहरण–चरण सरोज पखारन लागा।

उत्प्रेक्षा
(उपमेय में उपमान की संभावना)
उदाहरण–मानो झूम रहे है तरू भी, मन्द पवन के झोंकों से।

अलंकार पर कविता

बार–बार इक वर्ण जो आए, अनुप्रास की भाषा।
और यमक में जोड़ा आकर, अलग अर्थ दर्शाता है।।
और श्लेष में एक शब्द के, अर्थ अनेकों भाई।
अतिश्योक्ति में बढ़ा–चढ़ा कर, छोटी बात बताई।।
चरण–कमल एक रूप मानकर, रूपक की परिभाषा।
सा, सी, से, सम सरिस मान लो उपमा जी का आशा।।
उत्प्रेक्षा संकेत समझ लो, मनु, मानो, जनु, जानो।
दो चीजों में भ्रम पैदा हो, भ्रान्तिमान पहचानो।।

2 एवं 3 अंकीय प्रश्न –

काव्य बोध के 2 व 3 अंकीय प्रश्नों को लोक शिक्षण संचालनालय द्वारा जारी की गई प्रश्न बैंक से लेकर उत्तर मॉड्यूल की विषय सामग्री से हल करवाएँ, जिसके लिए व्याख्यान विधि, चर्चा विधि तथा प्रश्नोत्तर विधि का प्रयोग करें।

9 . कृतिका भाग – 1

- **निर्धारित इकाई से 1–1 अंक के 6 प्रश्न तथा 2 अंक का 1 प्रश्न परीक्षा में पूछा जाएगा।**
- **कृतिका भाग 1 से 'इस जल प्रलय में' पाठ से परीक्षा में कोई प्रश्न नहीं पूछा जाएगा।**

वस्तुनिष्ठ प्रश्नों की तैयारी मॉड्यूल के इकाई क्रमांक 1, वस्तुनिष्ठ प्रश्नों की गतिविधियों के माध्यम से करवाएँ एवं 2 अंक के अति लघुउत्तरीय प्रश्नों की तैयारी लोक शिक्षण संचालनालय द्वारा जारी की गई प्रश्न बैंक में दिए गए प्रश्नों के अभ्यास से करवाएँ।